SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गिरनार
39 वां अंक

सत्यमेव जयते
Government of India

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

गुजरात की पत्रिका

गिरनार

गिरनार गुजरात के जूनागढ़ में स्थित एक प्राचीन पहाड़ी है। यह हिंदु एवं जैन धर्म के पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है। कहा जाता है कि यहाँ 22 वें तीर्थकर नेमिनाथ जी ने 533 प्रबोधन प्राप्त सन्यासियों के साथ सर्वज्ञान की अनुभूति एवं निर्वाण को प्राप्त किया। प्राचीन काल से ही इस स्थान का जैन और हिंदुओं के लिए इसके मंदिरों के कारण एक विशेष धार्मिक महत्व रहा है। गिरनार की लिली परिक्रमा आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण गिरनार पर्वत के चारों ओर 36 किमी. तक हरित प्रदक्षिणा या परिक्रमा की जाती है। यह हिंदू कैलेंडर के अनुसार कार्तिक सुद ग्यारस से कार्तिक सुद पूनम (नवंबर) के दौरान आयोजित की जाती है एवं यह भवनाथ मंदिर से शुरू होती है। दुनिया भर से भक्त और आध्यात्मिक साधक और पर्यटक यहाँ मेले का आनंद लेते देखे जा सकते हैं। गिरनार पर्वत की तलहटी में नागा साधुओं द्वारा महाशिवरात्रि का मेला हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

॥ गिरनार ॥

वर्ष 2024-25 अंक-39

संरक्षक:

श्री हिमांशु धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार

संपादक मण्डल:

श्री मनीष शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी

श्री मुकेश कुमार शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी

सुश्री रिंकी गुप्ता, सहायक लेखा अधिकारी

श्री अमरदीप कुमार, सहायक लेखा अधिकारी

श्री प्रमोद कौरव, सहायक लेखा अधिकारी

श्री बिजेन्द्र कुमार बेरवाल, हिंदी अधिकारी

संपादकीय

कार्यालय प्रधान महालेखाकर (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट की हिंदी पत्रिका **'गिरनार' का 39 वां** अंक आप सभी को सहर्ष प्रस्तुत है। पूर्व के प्रयासों की निरंतरता को यथावत रखते हुए पत्रिका के इस अंक में मुख्य पृष्ठ पर गुजरात का प्रसिद्ध **'गिरनार'** पर्वत तथा अंतिम पृष्ठ पर **जूनागढ़ रियासत** की झलक है।

इस पत्रिका में कार्यालय के सदस्यों ने स्वरचित अपने अनुभवों, यात्रा वृतांत, सांस्कृतिक धरोहर संबंधी रचनाएं तथा लेखों एवं कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया है।

संरक्षक व संपादक मण्डल कार्यालयों के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि अधिकाधिक संख्या में स्वरचित रचनाएं प्रदान करते रहने का प्रयास करते रहें, जिससे कि आगे भी **'गिरनार'** के अंक प्रकाशित होते रहें।

आशा है कि पत्रिका का ये अंक भी आपको पसंद आएगा।

अस्वीकरण- इस अंक में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचारों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उत्तरदायित्व स्वयं रचनाकार का है, जिनसे संपादक मण्डल या कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	नाम और पदनाम	शीर्षक	रचना के प्रकार	पृष्ठ
1.	श्री आशुतोष शर्मा, लेखाकार	भगवती का आशीष	कविता	1
2.	श्री के आई कुंतार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	विषमताओं को पाटना: वर्तमान समय की मांग	लेख	5
3.	श्री गौरव कुमार उर्देनिया, स.लेखा अधिकारी	तलाश	लेख	7
4.	श्री चंचल कटारा, स.लेखा अधिकारी	कहानी: जो भगवान ने दिया वही सबसे अच्छा था	लेख	9
5.	श्री दीपक परमार, एमटीएस	पिता	कविता	12
6.	सुश्री निरमा कुमारी गुप्ता, क.हिं.अनुवादक	महिला सशक्तिकरण	लेख	13
7.	श्री पुष्कर गौतम, लेखाकार	जीवन की अभिलाषा	कविता	18
8.	श्री प्रमोद कौरव, स.लेखा अधिकारी	एक कैशियर के रूप में मेरे अनुभव	लेख	19
9.	श्री प्रशांत सिंह, स.लेखा अधिकारी	"प्रकृति के सानिध्य में: स्पीति की अविस्मरणीय यात्रा"	लेख	22
10.	सुश्री प्रिसिल्ला एंटो, व.लेखाकार	बारिश	कविता	27

क्र. सं.	नाम और पदनाम	शीर्षक	रचना के प्रकार	पृष्ठ
11.	श्री बिजेंद्र कुमार बेरवाल, हिंदी अधिकारी	क्या आदमी दुख में भी खुश रह सकता है?	लेख	29
12.	श्री मनीष शर्मा, स.लेखा अधिकारी	केरल:- ईश्वर का अपना घर	लेख	33
13.	श्री राकेश कुमार, स.लेखा अधिकारी	आधुनिक कृषि और किसान की व्यथा	लेख	37
14.	श्री राहुल धायल, स.लेखा अधिकारी	रजवाड़ो का शहर बीकानेर	लेख	43
15.	श्री रोहित कुमार, स.लेखा अधिकारी	अधिकारी एवं नेतृत्व कौशल	लेख	47
16.	सुश्री लक्ष्मी रानी, स.लेखा अधिकारी	मेरा नवोदय	लेख	50
17.	सुश्री लवी आर्या, स.लेखा अधिकारी	अदृश्य ताकतें: कहानियों से सच्चाई तक	लेख	55
18.	श्री सुखदेव गोयल, क.हिं.अनुवादक	भारत में शिक्षण का बदलता स्वरूप	लेख	60
19.	श्री सुमन सौरभ, एमटीएस	सड़कों पर हमारा धर्म	लेख	64
20.	श्री सोमदत्त यादव, क.हिं.अनुवादक	सुख दुख में समभाव	लेख	67
21.	श्री हिमांशु धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार	मैं अपने पैसे खा रहा हूँ!	लेख	70

श्री आशुतोष शर्मा
लेखाकार

भगवती का आशीष

लंका नगरी का समर क्षेत्र,
रावण की मायावी सेना
लंका के सोने से सज्जित सब रथ,
रथ पर वज्रों को लिए हुए मानवभक्षी सब दानवदल
प्रहस्त, महोदर, देवांतक
अतिकाय, अकम्पन, इन्द्रजीत
सब के सब भीषण महारथी ।

रघुपति-लक्ष्मण हैं खड़े हुए रथहीन
हनुमान, अंगद और जामवंत
नल-नील, मयंद, द्विविद आदि
रघुनायक की सेना में
वानर-भल्लूकों की टोली
करती गर्जन 'श्री राम' नाम ।

एक और खड़ा है दैत्यराज
दूसरी और खड़े हैं अवधनाथ
शक्ति को आमंत्रित करके
सब बाणों को अभिमंत्रित करके
चढ़ा धनुष पर दिव्य अस्त्र
रघुपति करते हैं वार सकल
रावण क्षण भर में, काट देता
कौशलेन्द्र के बाण सभी ।

गया दिवस और हुई रात्रि
पश्चिम में जल्दी से डूबे सूर्यदेव
शायद विध्वंस न देख सके
रघुनायक की सेना का ।

शिविर में सब थे चिंतामग्न
रघुपति से बोले जाम्बवंत
रावण की माया को हरने
जगदम्बा भजिये दीन नाथ ।

श्री राम बैठे कुश आसन पर
नित जाप रहे हैं शक्ति नाम
अर्पित करते हैं कमल पुष्प
मंत्र जाप में ध्यानमग्न
ऐसे ही बीते सात दिवस

आठवें दिवस विधिवत्
पूर्ण हुए सब जाप सकल अंतिम पुष्प चढाने को
रघुपति ने हाथ बढाया
पर कमल न पाया
आसन से उठ वे सकते नहीं,
किसी और से कह सकते नहीं,
भंग होगी तपस्या दुष्कर ।

बह निकली सहज ही अश्रुधार
राजीवनयन के नैनों से
“रावण की अब होगी विजय
क्या होगा अब वैदेही का ?
ले आया था उसका हाथ थाम
अयोध्या की महारानी बनाने को
पर हाय नियति का क्रूर खेल !
चौदह वर्षों का कठिन समय
उजड़े जंगल वीरानों में
घूमती फिरी मिथिला की राजकुमारी
बस मेरा संग निभाने को ।”

“जो वानर का चित्र देख डर जाती थी
अब हिंसक पशुओं से बतियाती थी
सुन्दर व्यंजन खाने वाली

अब कंद मूल पर रहती थी
जो पालकी से कभी उतरी नहीं
वन के पथरीली भूमि पर
नंगे पैरों ही कोसों चलती थी”

“दूंगा अब माँ को क्या उत्तर
कहाँ खो आया उनकी पुत्रवधू?
टकराता रहा हूँ लहर बन
चट्टानों से आजीवन
सब संघर्ष रहा स्वीकार मुझे
जो भी नियति मुझे दान में दे
पर हाय विधि धिक्कार तुझे
क्यों लूट लिया जीवन मुझ से ?”

तभी स्मरण हुआ रघुपति को
माता बचपन में कहती थी कमलनयन
तरकश से राघव बाण उठा
ज्यों ही नयन अर्पित करने को हुए उद्यत
भगवती ने लिया हाथ पकड़
“मेरा आशीर्वाद सकल
नहीं जायेंगे बाण निष्फल
रावण का अब होगा मरण
विजय श्री करेगी तुम्हारा वरण ” ।।

के आई कुंतार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

विषमताओं को पाटना: वर्तमान समय की मांग

तात्कालिक वैश्विक परिपेक्ष्य में हम देखतें हैं कि दुनियां विभिन्न प्रकार के विभेदों को लेकर आपस में संघर्षरत है। सृष्टि के प्रारम्भ एवं मानवीय सभ्यता के इतिहास के शुरूआती चरण से ही आपसी संघर्ष हमारे अस्तित्व का अभिन्न अंग रहे हैं। लेकिन वर्तमान विश्व में इस संघर्षों की तीव्रता काफी बढ़ गई है, जिसकी विभीषिका से संपूर्ण मानव समुदाय त्रस्त है। विश्व पटल पर विचारधारा के स्तर पर साम्यवाद और पूंजीवाद का संघर्ष है। तमाम देश आपस में लड़ रहे हैं, रूस और चीन जैसे राष्ट्र अपनी विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं के कारण छोटे राष्ट्रों को हड़पने के लिए संघर्षरत हैं।

विभिन्न देशों में धर्म के नाम पर युद्ध चल रहे हैं जिनमें लाखों लोग मारे जा रहे हैं। भारत जैसे बहुधार्मिक देश में आपस में ही धर्म को लेकर सांप्रदायिक हिंसा की चिंगारी भड़कती रहती है। कई राज्यों में भाषा के नाम पर मतभेद हैं तो कहीं अगड़े-पिछड़े की लड़ाई में विकास कहीं पीछे छूट गया

है। धर्म के साथ-साथ जाति और पंथ के नाम पर भी लोगों के मन फटे हुए हैं और विभिन्न क्षेत्रों में लोग जातीय वैमनस्य और पंथ आधारित कट्टरता का शिकार बन रहे हैं। इसके अतिरिक्त लिंग के आधार पर भेदभाव एवं विषैली कट्टरता तथा पश्चिम के नकारात्मक प्रभाव से नारीवाद और पितृसत्तात्मकता का संघर्ष सतत् रूप से जारी है। गांवों में परिवारों में आपस में संघर्ष है और बाजारवाद के युग में हर एक आदमी प्रतिस्पर्धा की दौड़ में दौड़ता हुआ एक दूसरे के साथ गलाकाट प्रतियोगिता करने में लगा हुआ है। बाहरी संसार के विभेदों और संघर्षों के अतिरिक्त आज का मानव तनाव और अवसाद से ग्रस्त और स्वयं के जीवन से असंतुष्ट होकर खुद में ही संघर्षरत है।

ऐसे में कहीं ना कहीं हमको धर्म, जाति, विचारधारा, लिंग एवं राष्ट्र की मानव और समाज निर्मित सतही अवधारणाओं से ऊपर उठकर मानव धर्म को सर्वस्थापित करने की आवश्यकता है। साथ ही बिना किसी सार्थक उद्देश्य के सिर्फ चूहा-दौड़ में भाग लेने की प्रवृत्ति पर भी रोक लगाने की जरूरत है। तभी हम बाहरी और आंतरिक मानवीय संघर्षों से ऊपर उठ पाएंगे और एक ऐसी दुनिया की स्थापना कर सकेंगे जो इन तुच्छ संघर्षों से मुक्त हो और जहां हर एक आदमी को खुशहाली एवं आत्म संतुष्टि के साथ जीने का अधिकार मिल सके।

श्री गौरव कुमार उदेंनिया
स.लेखा अधिकारी

तलाश

दैनिक जीवन की नीरसता में थकाहुआ इंसान जब वक़्त से दो पल खुद के लिए चुरा के बैठता हैं तो उसके ख्याल जो उसको सोचने व प्रश्न करने पर मजबूर करते हैं कि, जहां हर दिन एक जैसा लगता है और विचारों के बीच उलझन रहती है, हम रास्ता ढूंढने की कोशिश करते हैं। हमें कभी-कभी ये समझ नहीं आता कि क्या जो हम जीवनमें हासिल कर पाये वो काफी हैं या कुछ छूट गया या हमने जीवन में गलत रास्ता तो नहीं चुन लिया है।

इन सब उलझनों में हम खुश रहने की पूरी कोशिश करते हैं, लेकिन फिर भी खुश नहीं हो पाते। संघर्षों और समस्याओं के बीच, हमें जीने की वजह ढूंढनी पड़ती है।

हर ठोकर और असफलता में, एक नया अनुभव होता है। हर सांस में, जीवन जीने का एहसास होता है। हर चुनौती हमें मजबूत बनाती है। पर फिर भी हम जीवन जीने का उद्देश्य ढूंढते रहते हैं परंतु सच शायद आज तक कभी कोई पता ही

नहीं लगा पाया और इसका भी कोई सच है, मुझे नही पता। पर मैं यह जरूर कहना चाहूँगा कि जीवन का उद्देश्य सिर्फ एक प्रयोगात्मक जीवन का ही अंश हैं, साहस और धैर्य के साथ, हमें इस जीवन और उलझनों के बीच जो भी प्रयोग करसके हर मुमकिन प्रयास के साथ करना चाहिए । इसके संदर्भ में मेरे अनुभव कुछ लफ़्ज़ों में :

जंगल घूमा, पहाड़ घूमा, दरिया घूमा, घूमा मैंने जग संसार है
मिला ना वो सुख-चैन मुझे, जिसकी मुझे तलाश है ,
बोला था एक मलंग मुझे, जिस सुख-चैन की तुझे तलाश है,
सादा जीवन, मन भावन, जिसके उच्च विचार है ,
भूला तू है, बिसरा तू है, तेरे भीतर वो शख्श जिसकी तुझे तलाश है ।

श्री चंचल कटारा
स.लेखा अधिकारी

कहानी: जो भगवान ने दिया, वही सबसे अच्छा था

एक छोटे से गांव में रहने वाला एक लड़का, निर्मल, हमेशा से एक सरकारी नौकरी करना चाहता था। उसने कड़ी मेहनत की और अच्छे अंकों के साथ परीक्षा दी। निर्मल का सपना था कि उसे एक बड़े शहर में एक प्रतिष्ठित सरकारी नौकरी मिले, जहां उसे अच्छे वेतन के साथ ढेर सारे अवसर मिलें।

परंतु, जब परीक्षा के परिणाम आए, तो उसे उतने अंक नहीं मिले जितने उसने सोचे थे। वह बहुत निराश हुआ और उसे जो नौकरी मिली, वह राज्य की राजधानी में नहीं थी, बल्कि किसी दूसरे शहर में थी। उसे लगा कि यह नौकरी उसके सपने के बिल्कुल विपरीत थी और वह यह सोचकर दुखी हो गया कि भगवान ने उसे जो नौकरी दी, वह उसकी मेहनत का फल नहीं है।

हालांकि, निर्मल को जल्द ही पता चला कि वह जिस शहर में काम करने जा रहा था, वहां की सरकारी कार्यालय आने

वाले कुछ वर्षों में राज्य की राजधानी में शिफ्ट हो जाएगी, जो कि उसके अपने गांव के बहुत पास था। यह जानकर उसे बहुत राहत मिली, क्योंकि इसका मतलब था कि उसे अपने परिवार के पास रहने का अवसर मिलेगा और कोई लंबा सफर नहीं करना पड़ेगा।

जब निर्मल ने नई नौकरी शुरू की, तो वह पहले ही दिन से इस नए बदलाव का अनुभव करने लगा। शुरुआती दिनों में, भले ही वह दूसरे शहर में था, लेकिन उसने सोचा कि कुछ वर्षों बाद जब दफ्तर राजधानी में शिफ्ट हो जाएगा, तो यह न केवल उसे घर के पास रहने का मौका देगा, बल्कि उसे एक बड़े शहर की सुविधाएं भी मिलेंगी, जो उसके लिए लाभकारी होंगी।

कुछ महीनों बाद, निर्मल ने महसूस किया कि यह नौकरी उसके लिए कई मायनों में फायदेमंद साबित हो रही थी। सबसे पहले, वह अपनी नौकरी में संतुष्ट था, और दूसरी बात यह थी कि राजधानी में दफ्तर शिफ्ट होने के बाद, वह न केवल अपने परिवार के पास रहेगा, बल्कि यह उसे एक नई और बेहतर जीवनशैली भी प्रदान करेगा।

एक दिन निर्मल ने अपनी माँ से इस बारे में बात की और कहा, "माँ, मुझे लगता था कि मैं अपनी जिंदगी में कुछ अलग करना चाहता था, लेकिन भगवान ने मुझे जो रास्ता दिखाया, वह सबसे अच्छा निकला।"

माँ ने उसे गले लगाते हुए कहा, "बिलकुल बेटा, हम इंसान अक्सर वह चीजें चाहते हैं, जो हमें सही लगती हैं, लेकिन भगवान से यह कहो, 'जो भी मेरे लिए सबसे अच्छा है, वही मुझे दे,' क्योंकि वही रास्ता हमारे लिए सही होता है।"

निर्मल को इस बात का अहसास हुआ कि इंसान अपनी समझ से अक्सर क्या सही है, वह नहीं जानता। भगवान का मार्गदर्शन और उसकी इच्छा ही सबसे सर्वोत्तम होती है। वह अब यह सोचने लगा था कि भविष्य में वह कभी किसी चीज़ की कामना न करेगा, बल्कि सिर्फ भगवान से यही कहेगा: "हे भगवान, जो मेरे लिए सबसे अच्छा हो, वही मुझे दे।"

निर्मल ने अपनी नौकरी में पूरी मेहनत की और समय के साथ उसे यह एहसास हुआ कि वह जिस शहर में काम कर रहा था, वह धीरे-धीरे उसे अपने सपने के करीब ले जा रहा था। अब उसे यह समझ में आया कि कभी-कभी जो चीज हमें लगता है कि गलत है, वही हमारे लिए सबसे अच्छा हो सकता है।

इस कहानी से निर्मल ने यही सीखा कि हमें अपने जीवन में किसी भी चीज़ की बहुत अधिक इच्छाएं नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कभी-कभी हमें वह नहीं मिलता जो हम चाहते हैं, पर जो मिलता है, वह हमारे लिए सबसे अच्छा होता है।

श्री दीपक परमार
एमटीएस

पिता

पिता घने पेड़ की छाँव है
सुख, समृद्धि और खुशियों का गाँव है,
पिता जीवन के तूफान में चलती नांव है
घर की दहलीज में रखा पहला पांव है।
पिता हर एक मुश्किल का हल है
बच्चों के लिए खोता हर एक पल है,
पिता है तो हर एक चीज़ मुमकिन है
बिना पिता के हर एक चीज़ मुश्किल है।
पिता दुःख की बारिश में छाता बन जाता है
मायूसी की आँधी में हरदम साथ निभाता है,
पिता है तो घर परिवार पूरा है
बिना पिता के हर एक परिवार अधूरा है।
पिता हर एक घर परिवार की छत है
अपनी उम्र के आखिरी पड़ाव में लिखा ख़त है,

पिता ही जिंदगी है , पिता ही बंदगी है।

12 गिरनार

सुश्री निरमा कुमारी गुप्ता
क.हिंदी अनुवादक

महिला सशक्तिकरण

"खुद को ना तू कमजोर समझ, कहने दे दुनिया क्या कहती है
तू शक्ति है तू नारी है, तू असंभव को संभव कर सकती है।"

महिला सशक्तिकरण आज का बहुत ही प्रबल प्रसंग है। सशक्तिकरण से तात्पर्य व्यक्ति में उस क्षमता से है, जिससे व्यक्ति में योग्यता आ जाती है कि वह अपने जीवन के सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तिकरण का भी यही आशय है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि समाज के पूर्ण विकास के लिए महिलाओं का योगदान उतना ही जरूरी है जितना कि पुरुष का। महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक विभिन्न प्रकार से सशक्त किया जाना चाहिए। निःसंदेह आज महिलाएं जीवन के हर पहलू में सशक्त हो रही हैं चाहे शैक्षिक हो, राजनीतिक हो, या आर्थिक। पर सवाल यह है कि महिलाओं को शैक्षिक, राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक

स्वतंत्रता देना ही सशक्तिकरण है? महिलाओं को सशक्त करने की बात आई ही क्यूँ?

वैदिक काल में जहां नारी को शक्तिस्वरूपा समझा जाता था। मनुस्मृति में एक श्लोक है "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वहीं देवताओं का वास होता है। परंतु मध्यकाल आते-आते पुरुषप्रधान समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण बदलने लगा। महिलाओं को चारदीवारी में रखा जाने लगा उनकी स्वतंत्रता पर पाबंदी लगाई गई तथा शिक्षा जैसे मौलिक अधिकारों से वंचित रखा जाने लगा। यह स्थिति कई वर्षों तक चली। पर धीरे-धीरे कई समाज सुधारकों जैसे ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, सावित्री बाई फूले आदि ने महिलाओं को सशक्त करने के लिए भरसक प्रयास किया। महिलाओं को सशक्त करने के लिए मुख्य हथियार शिक्षा माना गया। शिक्षा के जरिए महिला आर्थिक रूप से ही नहीं मानसिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकती है।

आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि प्राचीन समय की तुलना में आज नारी अधिक शिक्षित है और यही कारण है कि आज की नारी का सफर चुनौतीपूर्ण होते हुए भी हर चुनौती को साहस से दूर कर लेती है। आज का समाज महिला सशक्तिकरण के लिए जागरूक है इसका सटीक उदाहरण पंचायती राज में महिलाओं का आरक्षण है, अखिल भारतीय तकनीक शिक्षा परिषद के अभिनव शिक्षा कार्यक्रम

द्वारा 'लीलावती पुरस्कार', बालिका समृद्धि योजना जैसे कई योजनाएँ बनाई गई हैं साथ ही हम प्रति वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं 11 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाते हैं। ये सभी प्रयास महिलाओं के सम्मान और उनको सशक्त करने के उद्देश्य से किए जा रहें हैं। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में समाज की जागरूकता अत्यंत सराहनीय है।

महिलाएं हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं। राजनीति क्षेत्र में चाहे इन्दिरा गांधी हो जिन्हें 'आयरन लेडी' के नाम से भी जाना जाता है या भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल हो उन्होने यह साबित कर दिया कि देश की बागडोर केवल पुरुषों के हाथ में ही नहीं महिलाओं के हाथ में भी सुरक्षित है। खेल के मैदान में भी महिलाएं अपना परचम लहरा रही है। पी वी सिंधु, मनु भाकर, कर्णम मल्लेश्वरी जैसी महिलाएं इसके उदाहरण हैं। अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी महिलाओं के कदम पीछे नहीं है, वेलनटीना तेरेश्कोवा अंतरिक्ष पर जाने वाली पहली महिला थी, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स और सिरिशा बांदला ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपना परचम लहराया।

गौरतलब है कि आज की महिला पुरुष के साथ कंधे से कंधे मिलाकर चल रही है और हर क्षेत्र में नाम भी कमा रही हैं, लेकिन विडम्बना यह है कि आज भी ऐसी बहुत महिलाएं है,

जो संकीर्ण सोच की शिकार है। उनके साथ ऐसे कुकर्म किए जा रहे हैं कि प्रश्न चिह्न महिलाओं के सशक्तिकरण पर नहीं बल्कि उन संकीर्ण मानसिकताओं पर है। आज भी महिलाएं घरेलू हिंसा की शिकार हो रही हैं, प्रताड़ित की जा रही हैं। कई कानून पारित किए गए फिर भी महिलाएं संकीर्ण सोच से बच नहीं पा रही हैं।

तभी होगा देश आश्वस्त
जब हर महिला होगी सशक्त

सशक्ति से तात्पर्य केवल अधिकार व स्वतंत्रता से ही नहीं साथ ही उनके प्रति सम्मान से है। आज हमारे देश के लगभग 74 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं। पुरुषों के लिए साक्षरता दर लगभग 82 प्रतिशत और महिलाओं के लिए साक्षरता दर लगभग 65 प्रतिशत है फिर भी महिलाओं के साथ जो कुकर्म हो रहा है इसके पीछे का कारण कहीं न कहीं नैतिक मूल्यों का अभाव है। नैतिक मूल्य के प्रति जागरूक होना अति आवश्यक है जिससे महिलाओं के साथ होने वाले कुकर्म को कम किया जा सके और महिला पूर्ण रूप से सशक्त हो सके।

महिला दिवस कार्यक्रम की झलकियाँ

17 गिरनार

श्री पुष्कर गौतम
लेखाकार

जीवन की अभिलाषा

जीवन में रंग भले कम हों ,
पर हों ऐसे जो उतारे न उतरे।
ख़ुशी के पल चाहे कम हों,
पर हों ऐसे जो भुलाये ना भूले।
जरूरतें सारी भले न हो पाएं पूरी,
पर ख्वाहिशें दिल की न रह पाएं कभी अधूरी।
जीवनसाथी भले न मिले मनचाहा,
पर साथ जीना कभी न लगे अनचाहा।
जीवन जलधि में लहरें जितनी भी आयें विकराल,
मांझी ऐसा मिले जो हर लहर पे ले जीवन नैया संभाल।
देनेवाले तू चाहे न दे पाए मुझे खुशियाँ तमाम,
पर हमसफ़र ऐसा दे जिसके सहारे हो जाए जिंदगी हँसते-हँसते तमाम।

श्री प्रमोद कौरव
स.लेखा अधिकारी

एक कैशियर के रूप में मेरे अनुभव

बैंक ऑफ इंडिया में कैशियर के रूप में काम करने के दौरान मुझे अलग-अलग तरह के अनुभव हुए और प्रत्येक अनुभव से एक नई सीख मिली। इनमें से एक घटना उल्लेखनीय है। एक ग्रामीण शाखा में अभी मुझे कैशियर के रूप में कार्यभार संभाले हुए कुछ ही हफ्ते व्यतीत हुए थे, दिन भर कैश काउंटर चलाने के बाद जब शाम को मैने अपना कैश टैली किया तो परेशानी के कारण मेरा सिर चकरा गया। क्योंकि टोटल कैश में 40 हजार रुपए कम थे, जिनका हिसाब नहीं मिल रहा था।

मैंने शाखा प्रबंधक महोदय के पास जाकर उनको इस बात से अवगत कराया। उन्होंने मुझे धैर्य रखने की सलाह दी और दोबारा सभी वाउचर्स (जमा एवं निकासी पर्चियों) का पुनर्मिलान करने को कहा। आपकी जानकारी के लिए बता दूं कि बैंक में जब भी एक कैशियर ग्राहक को नगद भुगतान करता है तो वह जिन नोटों को ग्राहक को देता है उनकी संख्या और उनका मूल्य सम्बंधित वाउचर के पीछे लिख देता है।

सभी वाउचर्स को खंगालते-खंगालते अचानक मुझे एक ऐसा वाउचर मिला जिसमें ग्राहक ने दस हजार रुपए की निकासी की थी लेकिन वाउचर के पीछे भुगतान की गई राशि 500×100 लिखी थी। मतलब मैंने 100 रुपए की गड्डी देने की जगह गलती से उनको 500 रुपए की गड्डी दे दी थी। ये बात मैंने तुरन्त जाकर मैनेजर को बताई, उन्होनें सीसीटीवी कैमरे की फुटेज से सत्यापन किया तो पाया कि मैं वीडियो में ग्राहक को पांच सौ रुपए की गड्डी देते हुए दिख रहा हुं। अब इस बात की तो पुष्टि हो चुकी थी कि किस ग्राहक को गलती से चालीस हजार रुपए ज्यादा दिए गए हैं, लेकिन समस्या यह थी कि इस रकम की वसूली कैसे की जाए?

मैनेजर साहब ने कंप्यूटर में उस ग्राहक की सम्पूर्ण जानकारी खंगाली और उसे फोन करके उसके पास चालीस हजार रुपए ज्यादा चले जाने की बात कही लेकिन वह ग्राहक इस बात से तुंरत मुकर गया। उसने कहा 'मेरे पास कोई भी ज्यादा पैसा नहीं आया, मुझे बैंक से सिर्फ दस हजार का भुगतान किया गया है।' इतना बोलकर उसने फोन काट दिया।

यह जानकर कि ग्राहक साफ झूठ बोल रहा है और उसका पैसा लौटने का कोई इरादा नहीं है, मेरी चिंता और बढ़ गई। लेकिन अपने वर्षों के अनुभव को ध्यान में रखते हुए मैनेजर ने मुझे समझाया कि 'चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि सबूत के तौर पर हमारे पास सीसीटीवी फुटेज है, जिसमें साफ दिख रहा है कि दस हजार रुपए की जगह पचास हजार रुपए दिए जा रहे हैं।'

मैनेजर साहब को इस शाखा में काम करते हुए लगभग दो साल से ज्यादा समय हो गया था, तो उनकी गांव के प्रभावशाली लोगों में अच्छी जान पहचान थी। उन्होंने तुरंत गांव के सरपंच को कॉल करके उक्त घटना की जानकारी दी। सरपंच ने कहा मैं अभी उस ग्राहक के घर जाकर बात करता हूं। आप परेशान मत होइए पैसे मिल जाएंगे। उसके बाद हमने क्षेत्रीय पुलिस स्टेशन के एस.एच.ओ. को फोन किया उन्होंने तुंरत एक कांस्टेबल को ब्रांच भेज दिया। शाखा में काम करने वाले उसी गांव के चौकीदार मनोहर भाई और कांस्टेबल रामसिंह के साथ मैं और मैनेजर साहब उस ग्राहक के घर गए। तब तक सरपंच साहब भी वहां पहुंच चुके थे।

हम सबने जाकर ग्राहक को फिर से पैसे वापिस देने का बोला, शुरुआत में उसने ना नुकर की लेकिन सरपंच जी और पुलिस को देखकर उसने सच बोलना उचित समझा और अनमने ढंग से चालीस हजार रुपए लौटा दिए। हमने सरपंच जी और कांस्टेबल रामसिंह को धन्यवाद बोला और पैसे लेकर शाखा वापिस आ गए। जल्दबाजी में की गई छोटी सी लापरवाही के कारण हुई इस घटना से मुझे जो परेशानी झेलनी पड़ी उससे मैंने ये सबक लिया कि आप जिस भी समय, जो भी कार्य करें, उसे पूर्ण मनोयोग से करें। काम करते वक्त आपके शरीर के साथ आपका मस्तिष्क भी वहां उपस्थित होना चाहिए, वरना एक छोटी सी गलती भी आपके लिए बड़ी मुसीबत खड़ी कर सकती है।

श्री प्रशांत सिंह

स.लेखा अधिकारी

"प्रकृति के सानिध्य में: स्पीति की अविस्मरणीय यात्रा"

राहुल सांकृत्यायन जी की '*किन्नौर देशकी यात्रा*' का वर्णन बचपन के पाठ्यक्रम में पढ़ा था। तब वह बस एक अध्याय मात्र था, जिसकी कुछ धुंधली स्मृतियां मन में अंकित थीं। उस समय जिस अनुपम सौंदर्य-वर्णन का केवल कल्पनाओं में आभास होता था, उसका वास्तविक अनुभव वर्षों पश्चात् संभव हो सका। प्रकृति का ऐसा सजीव चित्रण, जिसे पढ़कर विस्मय होता था, उसकी गहराई को प्रत्यक्षतः देखकर ही समझा जा सकता था।

न कोई शुरुआत, न कोई अंत बस कदम हैं; हिमालय की गोद में एवं उन पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए, जो बर्फीली चोटियों से घिरी घाटियों की ओर ले जाते हैं, यात्रा को एक रोमांचक अनुभव में परिवर्तित कर देते हैं। केवल इस सौंदर्य को निहारना ही पर्याप्त नहीं, अपितु इसे आत्मसात् करना ही इसकी वास्तविक अनुभूति है।

22 गिरनार

किन्नौर घाटी: हिमालय की गोद में पहला पड़ाव :

पहाड़ों की ओर निकलना ही अपने आप में सिहरनें पैदा करने वाला अनुभव है। खिड़की के बाहर झाँकते ही नज़ारा बदलने लगा। भीड़-भाड़ वाले माहौल से निकलकर जब घाटियों के बीच सफर शुरू हुआ, तो परिवर्तन स्पष्टतः परिलक्षित हुआ। किन्नौर घाटी में प्रवेश करते ही, प्रकृति अपने विविध रूपों से अभिभूत कर देती है। घने कोहरे से ढके पहाड़ी मार्ग और मद्दम गति से गतिमान वाहन यह संकेत दे देते हैं कि हिमालय की गहराइयों में प्रवेश किया जा चुका है। *ब्लू पाइन* के वृक्षों पर जमी बर्फ की हल्की परतें, सूरज की पहली किरण के स्पर्श से झिलमिलाने लगती हैं।

खाब संगम: दो धाराओं का मिलन :

किन्नौर घाटी का एक महत्वपूर्ण स्थल *खाब संगम* है, जहाँ स्पीति नदी सतलुज से आकर के मिलती है। इस मिलन का दृश्य अपने आपमें मंत्रमुग्ध कर देने वाला होता है। दो धाराएँ, पर्वतों के मध्य, एक-दूसरे से संवाद करते हुए, एक अनंत गंतव्य की ओर आगे बढ़ रही हैं एवं इस मिलन के ऊपर से गुजरते पुल ने इस भव्यता में चार चाँद लगा दिए हैं। और वैसे भी, पर्वतों के बीच से कल-कल की ध्वनि के साथ बहती नदी, क्या इससे अधिक नतमस्तक करने वाला दृश्य हो सकता है? जहाँ हर बूँद अनगिनत कहानियों को अपने प्रवाह में समेटे बह रही हो, और पर्वत अपने मौन एवं अपनी स्थिरता में संपूर्ण ब्रह्मांड का रहस्य समेटे हुए, अनंत काल से साक्षी बने खड़े हों, मानो समय और प्रकृति का एक मौन संवाद चल रहा हो।

(घाटी की कुछ झलकियाँ इस QR CODE के माध्यम से देखी जा सकती हैं।)	

काज़ा: बर्फबारी के बीच एक नई दुनिया :

अलाव एवं ये सामने का विहंगम दृश्य, कुछ ऐसे सुबह हुई काज़ा की । अपने आशियाने से एक छोटे ब्रिज तक सुबह की मन लुभा देने वाली वॉक आपके आंतरिक मन को यह एहसास ही नहीं होने देगी की आप -25°(-ve) सेल्सियस में टहल रहे हैं। सूरज की लालिमा पहाड़ों के एक छोर पर ऐसे बिखरी हुई है, मानो प्रकृति ने स्वयं का चित्र बर्फ से ढकी इन ढलानों पर प्रस्तुत किया हो। अंगीठी के पास बैठकर इस सुंदर चित्र का साक्षी बनना किसी सौभाग्य से कम नहीं। सैलानियों के ट्रैवलर्स की लगी कतार यह बताने के लिए काफी है कि किस तरह काज़ा की ख़ूबसूरती नें यहाँ सभी सैलानियों को अपनी ज़द में ले लिया है। अतः यात्राएं ही हैं जो हमारे भ्रम तोड़ती हैं, एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करती हैं तथा सीखने का सबसे बेहतर आयाम प्रस्तुत करती हैं ।

लांग्जा, हिक्किम और चिचम ब्रिज : एक रोमांचक अनुभव :

बर्फ से ढकी घाटियों के मध्य स्थित *लांग्जा*, जहाँ बुद्ध भगवान जी की विशाल प्रतिमा अद्भुत शांति का अनुभव कराती है। इसके समीप स्थित *हिक्किम पोस्ट ऑफिस*, जो विश्व का सबसे ऊँचाई पर स्थित डाकघर है, यहाँ की भौगोलिक विषमताओं के मध्य संचार व्यवस्था की निरंतरता का परिचायक है।

बर्फबारी के दौरानभारत के सबसे ऊँचे सस्पेंशन ब्रिज- *चिचम ब्रिज* पर खड़े होकर आसमान से धीरे-धीरे गिरती बर्फ की फुहारों को अनुभव करना, मानो किसी स्वप्नलोक का दृश्य हो। यह अनुभव रोमांचक होने के साथ-साथ अविस्मरणीय भी है। गर्म जलवायु, जहाँ औसत तापमान +25° सेल्सियस तक होता है, से निकलकर स्पीति घाटी की ठंडी, बर्फीली और मनमोहक वादियों में पहुँचना, जहाँ तापमान -27° सेल्सियस तक गिर जाता है, अपने आप में ऐसा अनुभव था जो शब्दों से परे है और जिसने प्रकृति की विविधता को बेहद करीब से महसूस करने का मौका दिया। यह अनुभव इस बात का भी साक्षी है कि प्रकृति कितनी अप्रत्याशित और खूबसूरत हो सकती है।

प्रकृति से संवाद :

घाटी का मंजर देखने जैसा है, आसमान से गिरती बर्फ की फुहारें मानों जैसे स्वागत के लिए उतर आई हों। बर्फ की चादर ओढ़े पहाड़, गहरी घाटियां और शांत निर्मल शीतल बहती नदियां ऐसी प्रतीत होती है, मानो किसी चित्रकार के द्वारा बेहद क़रीने से कैनवास पर उकेरी गई हों। स्पीती घाटी का सौंदर्य एवं हैरत-अंगेज नज़ारे, काज़ा की बर्फबारी का जादू, बृहद हिमालय में सतलुज नदी के साथ का सफर अपने आप में अद्भुत है। ये ऐसे अध्याय हैं, जो देखने पर किसी की भी स्मृति में जीवनपर्यन्त कैद हो जाएं। प्रकृति को निहारने से लेकर जीवन के अर्थों की और गहरी समझ इस यात्रा के नगीने हैं। यह यात्रा केवल भौगोलिक परिवर्तनों तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह आत्मविश्लेषण, मानसिक नवस्फूर्ति और सौंदर्यबोध को नए स्तर तक पहुँचाने का अवसर भी प्रदान कर गई। (डायरी के पन्नों से)

सुश्री प्रिसिल्ला एंटो
व.लेखाकार

बारिश

तपती गर्मी का मौसम आया है

धरती आग उगलने लगी और प्यासी चिड़ियों ने शोर मचाया है,

बस इतने में काली घटा छाई

लेकर साथ अपने यह ढेर सारी खुशियां आई।

ठंडी ठंडी हवा आई, साथ मिट्टी की भीनी सुंगध फैलाई

बादलों ने शोर मचाया, खुशियों की बौछार लाए है,

बारिश जब आती है, ढ़ेरों खुशियां लाती है

तपती धरती की प्यास बुझाती है।

27 गिरनार

बूंदों की मधुर आवाज सुकून की लहर लाई है
गरमा गरम पकोड़ों से बच्चों में खुशहाली छाई है,

किसानों के होठो पे मुस्कान छाई है
बारिश रिमझिम फुहारों से सूखा मिटाती है।

रंग बिरंगे फूल खिलाती है, बीजों से नए पौधे उगाती है
तितलियों को खूब रिझाती है, सब तरफ हरियाली छाई है,

बारिश जब भी आती है, धरती को महकाती है
सब मिलकर बच्चे बन जाते है, और ढेरों खुशियों लाती है।

ऑडिट जागरूकता सप्ताह 2024

28 गिरनार

श्री बिजेंद्र कुमार बेरवाल
हिंदी अधिकारी

क्या आदमी दु:ख में भी खुश रह सकता है?

दुनिया में न जाने ऐसे कितने लोग हैं जो न जाने अंदर से कितने दुखी होते हैं, उनका दु:ख, उनकी परेशानी हर समय उनको मन में एक सवाल, एक चुभन बनकर चुभती भी रहती होगी लेकिन फिर भी उनके चेहरे पर कभी कोई दु:ख का भाव नहीं दिखता है, वो सदा दूसरों को मुस्कुराते हुए ही दिखेंगे पता नहीं कि उनके पास वो कौन सी शक्ति होती है जिससे वो अपने दु:ख को चाहते हुए भी दिखाते नहीं है या उसे दिखाना नहीं चाहते हैं, उन्हें लगता है कि यदि वे अपना दु:ख दूसरों को बताएंगे तो हो सकता है कि शायद सामने वाला उसे समझेगा कम और उसकी बात पर हंसे ज्यादा। इसलिए बताना व्यर्थ होगा।

ऐसे लोगों और ऐसी बातों के कारण ही कई बार दूसरे दुखी लोगों को भी अपने दु:ख अपने तक सीमित रखने की प्रेरणा और हिम्मत भी मिलती है। सब कहते भी यही है कि सही कर्म करते रहो, बाकी सब ऊपर वाले पर छोड़ दो, सब उसे ही देखना है। उस नीली छतरी वाले को सब की चिंता है, वो ही सब सही करेगा।

इसलिए, जहाँ तक संभव हो सके तो अपनी परेशानी किसी को न बताकर, स्वयं ही उसका हल ढूंढने का प्रयास करते रहना चाहिए। लेकिन, दूसरी तरफ इस बात का एक पहलू यह भी है कि जितनी ये बात कहने, सुनने और पढ़ने में अच्छी लगती है लेकिन वास्तव में आजकल के समय में आज के मानव के लिए ऐसी बातों पर अमल करना इतना आसान भी नहीं होता है। आजकल के हालातों में तो अब हर छोटी सी छोटी परेशानी भी हल नहीं होने पर व्यक्ति को अब बहुत बड़ी लगने लगती है।

आजकल की लाइलाज बीमारियों ने भी व्यक्ति के जीवन को बहुत ही दुष्कर बनाकर रख दिया है। इसी तरह आजकल के इस भौतिक जगत में बढ़ते सुख-साधनों और इस बढती आधुनिकता ने भी व्यक्ति की जीवन शैली को बदल कर रख दिया है जिससे उसका स्वास्थ्य बिगडने लगा है और उसी के कारण व्यक्ति को शुगर, बीपी, थॉयरड, कैंसर आदि जीवन भर साथ चलने वाली बीमारियों ने घेर लिया है। जिनका इलाज नहीं है, केवल इन्हें कंट्रोल किया जा सकता है, क्योंकि अभी तक तो कोई स्थाई इलाज निकला ही नहीं है।

आजकल हम सभी पैसे की ताकत को बहुत अच्छी तरह से समझ गए है कि पैसे में बहुत ही ताकत होती है। पैसे के बारे में लोग अक्सर ऐसा भी कहते हैं कि भाई पैसा भगवान तो नहीं है, लेकिन भगवान से कम भी नहीं है। इसकी सहायता से व्यक्ति यदि अपनी सभी समस्याओं का हल तो नहीं लेकिन बहुत हद तक तो हल कर ही लेता है।

लेकिन कई बार सब जतन करने और पैसे का भी पूरा इस्तेमाल करने के बाद भी केवल निराशा ही हाथ लगती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति पूरी तरह से बेबस हो जाता है।

परेशानियां व्यक्ति का किसी न किसी रुप में उसका इम्तिहान लेती रहती है, जिन्हे हल करने में वो कभी-कभी कामयाब हो जाता है तो कभी-कभी नहीं। इसी क्रम में मुझे स्मरण हुआ है कि हमारे कार्यालय में एक व.लेखा अधिकारी की सेवानिवृत्ति के अवसर पर हमारे कार्यालय अध्यक्ष ने भी उस समय ध्यान में आएं एक प्रसंग का जिक्र किया था जिसमें उन्होंने एक ऐसे कार्मिक के बारे में बताया कि वो व्यक्ति अपनी पत्नी को कैंसर की बीमारी को लेकर बहुत परेशान था, लेकिन कभी भी उसके चेहरे पर कोई परेशानी नहीं दिखती थी, इतना परेशान होते हुए भी वह दूसरों को शांत ही दिखता था। इसके अलावा, इस प्रकार के और भी अन्य उदाहरण है जो हमें देखने को मिल जाएंगे जैसे किसी का जवान बेटा/बेटी किसी बीमारी/दुर्घटना के कारण यदि चला जाए तो उन माता-पिता से पूछों कि दु:ख क्या होता है, शायद ही बयां कर पाएं।

दु:ख की परिस्थितियों में होते हुए भी दूसरे लोगों को खुश दिखना या दिखाना बहुत ही हिम्मत वाले लोगो का काम होता है, ऐसा सच्चे मन या दिल से करना हर किसी के बस की बात नहीं होती है, क्योकि, अक्सर ऐसा भी देखने में आता है कि दु:ख या परेशानी अब बहुत ही बलवती हो चली है, जो व्यक्ति को मन और मन से तोडने में देर नहीं लगाती हैं।

ये भी सत्य है कि व्यक्ति के जीवन में उसके सामने आई हर प्रकार की समस्याओं को हल करने की प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता अलग-अलग होती है, कोई किसी बात को कैसे देखता है, उसे कैसे हल करता है? यह सब उस व्यक्ति के साथ-साथ व्यक्ति के पास कितना धन है, कितना ज्ञान है, कोई कितना तन मन से कितना मजबूत है और उसने अपने जीवन के अनुभवों से कितना सीखा है, आदि-आदि बातों पर बहुत कुछ निर्भर करता है और यही सब बातें या तो व्यक्ति के जीवन में एक मजबूत आत्मविश्वास का निर्माण कर देती है या उसे कमजोर बनाकर जरूरत पडने पर कमजोर आत्मविश्वास के कारण उसको पीछे भी धकेल देती हैं।

इसलिए, निष्कर्ष यही है कि हो सके तो समय रहते व्यक्ति को घबराने की जगह समस्या का हल जल्द से जल्द खोजने का प्रयास प्रारंभ कर देना चाहिए। यदि व्यक्ति ऐसा करता है तो यकीनन तो नहीं कहा जा सकता है कि अंत में जीत उसकी ही होती है, लेकिन यह बात तय है कि हार मानने वालों की अपेक्षा कोशिश करने वालों की जीत की संभावनाएं बहुत अधिक बढ़ जाती है और सब कुछ ठीक रहा, समय और भाग्य उनके पक्ष में रहे तो फिर यकीनन जीत फिर उसकी ही होती है। बस आवश्यकता है तो घबराने की अपेक्षा समस्या को समझने की और उसको हल करने की।

श्री मनीष शर्मा
स.लेखा अधिकारी

केरल:- ईश्वर का अपना घर

भारत के सबसे सुंदरतम पर्यटक आकर्षणों में से एक केरल की यात्रा मेरे जीवन के कुछ अविस्मरणीय अनुभवों में से एक है। राजकोट से फ्लाइट पड़कर हम मुंबई पहुंचे उसके बाद हमने मुंबई से कोच्चि हवाई अड्डे के लिए फ्लाइट पकड़ी। कोच्चि पहुंचकर हमने रात्रिकालीन विश्राम किया।

केरल के पर्यटक स्थलों का भ्रमण हमने अगले दिन प्रारंभ किया। कोच्चि से मुन्नार निकलने से पहले हमने कोच्चि के प्रसिद्ध शंकराचार्य मंदिर में दर्शन किए। मुन्नार जाने के

रास्ते में हमने चीयप्पारा के मनमोहक झरने को देखा। थोड़ा आगे जाने पर हमें वालरा झरना दिखाई दिया। इसके बाद मुन्नार से कुछ दूरी पहले इड्डुक्की जिले में हमने मसाले एवं औषधियों के बागान को देखा।

मुन्नार पहुंचकर सर्वप्रथम हम चुनायामककल झरने पर पहुंचे। यहां पर हमने नारियल पानी का आनंद लेते हुए झरने के मनोहारी दर्शन किए। इसके बाद हम नीलगिरी पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी अनईमुडी पीक पर पहुंचे। दिन में इतना सब घूमने के पश्चात हम वापिस अपने होटल की तरफ चल पड़े। रास्ते में हमने पोनमुडी हैंगिंग ब्रिज भी देखा। इस पुल को हैंगिंग ब्रिज इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह बिना किसी स्तंभ के सहारे खड़ा है।

यात्रा के तीसरे दिवस हम सुबह का नाश्ता करके चाय बागानों के लिए निकल गए। वहां से हम एराविकुलम नेशनल पार्क गए। यह राष्ट्रीय उद्यान 'नीलगिरि तहर' नामक बकरी की एक दुर्लभ प्रजाति का निवास स्थान है। यह पार्क दुर्लभ 'नीलकुरिंजी पुष्प' का भी घर है जोकि 12 वर्षों में एक बार खिलता है। इसके बाद हम चाय के कारखाने देखने के लिए गए जहां हमने चाय की हरी पत्तियों से चाय बनने की संपूर्ण प्रक्रिया देखी। इसके बाद अगले भ्रमण स्थल रोज गार्डन जाने के रास्ते

में हमने मट्टूपेटी बांध देखा। मट्टूपेटी झील में आप बोटिंग भी कर सकते हैं। रोज गार्डन जाकर हमने विभिन्न तरह के सुंदर फूल देखे। इसके बाद हम एको पॉइंट गए जोकि एक सुंदर पिकनिक स्पॉट है। यहां झील किनारे से खड़े होकर आवाज लगाने पर आवाज उस तरफ जंगलों से प्रतिध्वनित होकर आती है, इस कारण इस जगह को एको पॉइंट कहते हैं और फिर हम आज की यात्रा के अंतिम स्थल चॉकलेट फैक्ट्री गए जहां हमने चॉकलेट बनाने की प्रक्रिया देखी, फिर हम अपने होटल वापस लौट आए।

यात्रा के चौथे दिन हमने थेक्कडी के लिए प्रस्थान किया। यह एक बेहद मनमोहक हिल स्टेशन है। थेक्कडी पहुंचकर हम सबसे पहले एलिफेंट पार्क गए। यहां पर हमने हाथी की सवारी की, यह अनुभव हमारे लिए काफी आनंददायक था। यहां से हम पेरियार झील में बोटिंग के लिए चल दिए। बोटिंग के दौरान हमने झील के किनारे चिंकारा के झुंड को देखा। झील के चारों तरफ पेरियार रिजर्व क्षेत्र है जो वन्यजीवों का निवास स्थान है। बोटिंग के दौरान हमने कई सुंदर पक्षी और जंगली भैंसे का झुंड भी देखा। थेक्कडी की इस शानदार और आनंददायक यात्रा के बाद हमने होटल जाकर विश्राम किया।

यात्रा के पांचवें और अंतिम दिन हम थेक्कडी से अलेप्पी के लिए रवाना हुए। इसे आलप्पुझा भी कहा जाता है। यह एक लोकप्रिय पिकनिक स्पॉट है। हमने यहां पहुंचकर अलेप्पी बैकवॉटर में घूमने के लिए एक छोटी बोट किराए पर 2 घंटे के लिए ली। इस यात्रा में हमने इस सुंदर झील के किनारे बसे हुए लोगों का जनजीवन देखा। बैकवॉटर में चलते हुए हमने पंडित जवाहरलाल नेहरू बोटिंग स्टेडियम भी देखा जो नाव रेस के लिए विख्यात है। इस रेस का आयोजन प्रतिवर्ष ओणम पर्व के अवसर पर किया जाता है। यहां से हम होटल गए, वहां कुछ देर आराम करने के बाद हम अलेप्पी के बीच देखने चले गए। यहां बीच पर हमने कुछ देर समय व्यतीत करने के बाद डूबते हुए सूर्य के सौंदर्य को निहारा। साथ ही डूबते हुए सूर्य के साथ हमने केरल को भी अलविदा कह दिया। होटल जाकर रात्रिकालीन विश्राम करने के पश्चात हम अगले दिन कोच्चि के लिए निकल गए जहां से हमने वापस घर आने की यात्रा प्रारंभ की। केरल का यह पांच दिवसीय सफर वास्तव में हमारे लिए एक सुखद और आंनदायक अनुभव था।

श्री राकेश कुमार
स. लेखा अधिकारी

आधुनिक कृषि और किसान की व्यथा

भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। भारतीय संस्कृति के विकास में कृषि की भूमिका अहम रही है। भारतीय संस्कृति के मुख्य उत्सव / त्योहार फसलों के बोए जाने या पक जाने पर मनाए जाते हैं, जोकि हमारी कृषि प्रधान संस्कृति का प्रतीक है । इसलिए, भारतीय संस्कृति के पर्व-त्यौहार, रीती रिवाज,

संस्कार, कर्म कांड आदि खेती से जुड़े हुए हैं। किसान रूपी अन्नदाता का हमारे समाज में अहम स्थान था। जब हमारी अर्थव्यवस्था गाँव तक सीमित थी, तो किसान उस अर्थव्यवस्था की धुरी था। यही किसान अपने सहयोगियों (लोहार, कुम्हार, बडई, सुनार, मोची और बुनकर) को अनाज देता था। सभी उसकी खुशहाली की कामना करते थे, क्योंकी उसके पैदा किए हुए अनाज से सभी के घर में चूल्हा जलता था। यहाँ तक की राजाओं के कर का मुख्य स्रोत भी किसानों का अनाज ही होता था। राजा किसानों से एक तिहाई / एक चौथाई या आधे भाग तक कर लगाते थे, जिसे अनाज के रूप में वसूला जाता था।

खेती ही भारत के आत्मनिर्भर होने का मूल आधार थी। अग्रेजों ने भूमि व्यवस्था को बदलकर जमीदारी प्रथा आरम्भ की, इससे किसान निरंतर गरीब होते रहे और खेती पर देश की आत्मनिर्भरता नष्ट होती गयी।

भारतीय संस्कृती में खेती और पशुपालन एक ही सिक्के के दो पहलू रहे हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक रहे हैं। किसानों को अपने खेत जोतेने के लिए बैल, ऊंट या घोड़ो की आवश्यकता थी। किसानों के खान-पान में दूध की अहम् भूमिका थी, इसलिए, वह दूध के लिए गाय/भैंस/बकरियों को पालता था। पशुपालन और खेती एक दूसरे पर निर्भर थे। खेतों में पैदा होने वाला घास और भूसे से पशुओं का पोषण होता था। जानवरों के गोबर और गौमूत्र से जमीन में उत्पादन शक्ति का सर्जन होता था। अत:

ये तीनो कारक; किसान, पशुपालन और खेती ; एक दूसरे के पूरक थे। किसान का पूरे समाज में अहम् स्थान होते हुए भी क्या उस जमाने का किसान खुशहाल था? किसानों की दशा का वर्णन हमें समकालीन लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं/कहानियों (जैसे मुंशी प्रेमचंद के गोदान) में देखने को मिलता है।

आओ अब, आज के युग के किसानों की दशा पर चर्चा करते है। जिसके पास जोतने के लिए ट्रेक्टर है, सिंचाई के लिए टूबवेल है और आधुनिक मशीनो का उपयोग करता है। इसके अलावा वह रासायनिक खादों का प्रयोग करता है, कृषि वैज्ञानिको से सलाह लेता है। उनके द्वारा विकसित किए हुए आधुनिक बीजों का प्रयोग करता है, और उसे मौसम की जानकारी तो पहले से होती है। इस में कोई दो राय नहीं की किसानों की पैदावार में दो से तीन गुना का इजाफा हुआ है। तो क्या आज का किसान समृद्ध और खुशहाल है।

आ गए ये कहाँ आ गए हम

उपरोक्त सभी प्रयासों और तकनीकों के बावजूद किसान आज भी बेचारा ही है आज के जहरीले व महंगे खाद व कीटनाशकों ने देश के किसानों को आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया है। किसान का बीज, कीटनाशक व इन जहरीली खादों को खरीदने में ही अपनी कुल फसल की आय का लगभग 80% खर्च हो जाता है। प्रतिवर्ष रासायनिक खाद व जहरीले कीटनाशकों के नाम पर लगभग 5 लाख लोगों की मौत व दूषित आहारजनित

रोगों को नियन्त्रित करने में देश के लगभग 7 लाख करोड़ रुपये बर्बाद हो जाते हैं। इस जहरीली खाद से उत्पन्न जहरीला अन्न खाकर देश के 125 करोड़ लोगों की जिंदगी में खतरनाक रोग पैदा हो गये हैं।

समय के साथ और आधुनिक मशीनों के उपयोग से एक तरफ तो किसानों को अपने कार्यों में सुगमता हुई। पहले जो किसान वर्ष भर व्यस्त रहता था वह अब कृषि यंत्रों की मदद से चंद दिनों में अपना काम खत्म कर देता है। लेकिन इन मशीनो के खरीदने उनके संचालन के खर्चो ने किसानों की आमदनी का बड़ा हिस्सा चला जाता है। अत : कुछ दिनों में अपना काम खत्म करके बाकी समय वह बेरोजगार रहता है। इधर कृषि आमदनी का बड़ा हिस्सा बीज, किटनाशक और रासायनिक खाद खरीदने में चला जाता है।

आधुनिक कृषि यंत्रों ने पशु की जगह ले ली है। इससे, किसानों का पशुपालन का मोह भी कम हो गया है और किसानों ने पशुपालन भी बहुत ही कम कर दिया या फिर पूरी तरह से छोड़ दिया है। पशु ना होने के कारन, किसानों के लिए फसलों के भूसे का उपयोग नहीं रह गया है। पशुओं से प्राप्त होने वाली गोबर की खाद नहीं मिलने से किसान रासायनिक खाद खरीदने को विवश हो रहा है।

आधुनिक कृषि और किसानों की दुर्दशा में उपरोक्त सभी कारकों की भूमिका रही है अथार्त जैविक चक्र को तोड़ना है।

आधुनिक कृषि तकनीक से उत्पादित अनाज और सब्जिओं में पोषक तत्वों में लगातार कमी हो रही है जिससे, सभी प्राणियों में विभिन्न बीमारियों का संचार हो रहा है।

आ अब लौट चलें

पुरातन कृषि विज्ञान और आधुनिक कृषि विज्ञान का समानांतर आकलन करने की आवश्यकता है। पुरातन कृषि विज्ञान का सबसे सकारात्मक पहलू ये है कि इसने भूमि और पशुधन को प्रमुखता दी ना कि पैदावार को। निश्चित तौर पर जिस तरह सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को काट कर सोना नहीं निकाला जा सकता। इसी तरह जमीन और पशुधन को नजरअंदाज कर पैदावार को बढ़ाना भी मूर्खता है। परंपरागत वैदिक कृषि विज्ञान को भूलकर हमने वही गलती की है।

वैदिक विज्ञान में कृषि की संकल्पना एक चक्र के रूप में दिखाई गई है। इसमें कृषि और पशुपालन को बराबर का महत्व दिया गया है। इस चक्र में भूमि, पशु और मनुष्य तीनों एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते थे और इन तीनों से यह कृषि चक्र पूरा होता था। मानव कल्याण के लिए शुद्ध खाद्य पदार्थों को सभी को उपलब्ध कराने के लिए किसानों को इसी को अपनाने की जरुरत है ।

हमें भारतीय जीवन दर्शन, जीवन लक्ष्य, जीवन मूल्य और जीवन आदर्श के अनुरूप जीवनशैली अपनानी होगी। आध्यात्मिकता के बिना भौतिक विकास अंधा व विनाशकारी है। किसानों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य मिले ताकि उनका जीवन खुशहाल हो सके और कृषि उत्पादों से उपभोग से सभी जीवों को खुशहाल जीवन मिले न की बीमारियाँ। पिछले लगभग 100 वर्षों से केन्द्रीयकरण, एकरूपीकरण, बाजारीकरण व अंधाधुंध वैश्वीकरण को ही सभी समस्याओं का रामबाण इलाज माना जा रहा है। इस अंधी मानसिकता से हटकर भारतीय भूमंडल के अनुसार विकेन्द्रीकरण, विविधीकरण, स्थानिकीकरण और बाजार मुक्ति की दिशा में आगे कदम बढ़ाने से ही आज की अपसंस्कृति की सुनामी से बचा जा सकेगा।

श्री राहुल धायल
स.लेखा अधिकारी

रजवाड़ो का शहर बीकानेर

राजस्थान का इतिहास राजाओं, रजवाड़ों, व उनके शौर्य की गाथाओं से भरा हुआ है। प्रसिद्ध इतिहासकार रुडयार्ड किपलिंग के शब्दों में "दुनियां में एक मात्र धरती राजस्थान है जहाँ पर मिट्टी भी शायद वीरों की हड्डियों से बनी हुई है"। हमेशा भारतवर्ष पर होने वाले आक्रमणों को सबसे पहले इसी धरा ने झेला है। पिताजी के राजकीय सेवा होने से मुझे राजस्थान के विभिन्न शहरों में रहने का मौका मिला। इसी क्रम में मुझे राजस्थान की सीमा से सटे बीकानेर शहर में रहने का मौका मिला। अगर आप बीकानेर का इतिहास देखते हैं तो आपको पता चलेगा कि इस राज्य की स्थापना महाभारत काल में हुई थी, उस समय इस शहर को जांगल देश के नाम से जाना जाता था। बीकानेर, राजस्थान के चुनिंदा सबसे शानदार पर्यटन स्थलों में आता ये शहर आज भी अपनी राजपुताना सभ्यता, संस्कृति और ऐतिहासिक किलों के पुराने इतिहास के साथ घिरा हुआ है। भारत के उत्तर पश्चिमी राज्य राजस्थान के थार रेगिस्तान के बीचों-बीच मौजूद बीकानेर को राजस्थान का दिल कहते हैं। इस

लेख के माध्यम से मैं आप सभी को बीकानेर का भ्रमण कराता हूँ।

सर्वप्रथम आपको बीकानेर के जूनागढ़ किले कीसैर पर ले चलता हूँ जिसके चारों ओर बीकानेर शहर पला-बढ़ा है। किले को शुरू में चिंतामणि कहा जाता था और फिर 20 वीं शताब्दी में इसका नाम बदलकर जूनागढ़ किला कर दिया गया। जूनागढ़ किले की नींव 1478 में राव बीका ने रखी थी। जूनागढ़ किले का निर्माण बीकानेर के शासक राजा रायसिंह ने 1589 से 1594 तक करवाया था।यह किला लगभग 1100 सौ गज की परिधि में बना है, जो दो तरफ़ से दीवारों से घिरा हुआ है। यह उन किलों में शामिल है जो पहाड़ पर नहीं बने हैं। यह किला अपनी वीरता के गौरवशाली इतिहास के लिए प्रसिद्ध है। इस किले को किसी अन्य शासक ने नहीं जीता। इस किले में महल और रंगमंच बने हैं। इस किले की वास्तुकलामें मुगल, गुजराती और राजपूत शैली का एक अच्छा मिश्रण है। जूनागढ़ को बादल महल भी कहा जाता है क्योंकि जब राजस्थान में बारिश का मौसम रहता था उस दौरान राजा महाराजा बादल महल में बारिश का आनंद लिया करते थे। पर्यटक इस महल में आकर ऐसा महसूस करते हैं जैसे कि वे किसी बादल के नीचे आ गए हों। किले में एक संग्रहालय है जहाँ ऐतिहासिक कपड़े, चित्र और हथियार देखे जा सकते हैं। यहाँ संस्कृत और फ़ारसी में लिखी पांडुलिपियाँ पर्यटक किले के संग्रहालय में देख सकते हैं। यहाँ दुर्लभ चित्र, रत्न और हथियार हैं। किले की गैलरी, लॉन और

खिड़कियां पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करती हैं। करण महल, अनूप महल, चंद्र महल और फूल महल यहाँ के कुछ प्रमुख आकर्षण हैं। इस जगह को विशेष रूप से बीकानेर में घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक माना जाता है।

अब अगली यात्रा पर हम देशनोक चलते हैं। जहाँ विश्व प्रसिद्ध करणी माता मंदिर है, जिसे 'डोकरी का मंदिर' या 'चूहा मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है। करणी माता मंदिर अपनी वास्तुकला के लिए विश्वविख्यात है। यह बीकानेर से लगभग 30 किमी दूर स्थित 600 साल पुराना मंदिर है। इस मंदिर की खास बात यह है कि इस मंदिर में हजारों की संख्या में चूहे रहते हैं और इनकी पूजा की जाती है। आपको ये जानकार आश्चर्य होगा, लेकिन यहाँ चूहों द्वारा खाया जाने वाला खाना बेहद पवित्र माना जाता है और बाद में इसे 'प्रसाद' के रूप में परोसा जाता है। इन पवित्र चूहों को काबा के रूप में जाना जाता है, और इन चूहों के दर्शन करने के लिए दुनियाभर से लोग बहुत दूर-दूर से आते हैं।

बीकानेर में ही भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन भारत सरकार ने राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र कागठन किया है, तथा इसे एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में मान्यता दी गई है। ऊँटों के विकास और अनुसंधान के पहलुओं को जानने के लिए यह एक संग्रहालय का स्वरूप है। आप यहाँ ऊँट की विभिन्न नस्लों को देख सकते हैं एवं ऊँट की सवारी, सफारी और फोटोग्राफी का आनंद ले सकते हैं। यहाँ आपको ऊँट के दूध के कई प्रकार के व्यंजन एवं मिठाइयाँ मिल जाएगी।

बीकानेर शहर का असली मजा उसके खाने में छिपा हुआ है। यहाँ के शाही समोसे, चूरमा, सांगरी(राजस्थान का सुपर फूड) की सब्जी, पापड़ की सब्जी, राज कचोरी, बीकानेर के विश्व प्रसिद्ध बीकानेरी भुजीया, घेवर अपना अलग ही जायका रखते हैं। आपका बीकानेर दर्शन लालजी के स्पंजी रसगुल्ले खाये बिना अधूरा ही है।

मुझे उम्मीद ही नही पूरा विश्वास है कि आपने भी मेरे साथ इस यात्रा का आनंद लिया होगा साथ ही आपसे आग्रह करता हूँ कि आप परिवार सहित एक बार बीकानेर का भ्रमण अवश्य करें।

श्री रोहित कुमार,
स.लेखा अधिकारी

अधिकारी एवं नेतृत्व कौशल

जीवन में निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति मेहनत, भाग्य, अवसर, बुध्दि, व्यक्तित्व, कौशल इत्यादि मुख्य कारकों पर निर्भर करती है। इन सभी के समग्र समागम से ही निर्धारित उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को तय समय सीमा में प्राप्त किया जा सकता है।

हर व्यक्ति के जीवन में कुछ उद्देश्य, सिध्दांत एवं लक्ष्य होते हैं। इन सभी की प्राप्ति के लिए हर कोई भरसक प्रयास करता है तथा "येन केन प्रकारेण" इनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है।

कार्यालय में भी अधिकारियों के साथ-साथ सभी कर्मचारियों के लिए भी वार्षिक तौर पर उद्देश्य एवं लक्ष्य निर्धारित किए जाते है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति एक व्यक्ति/ कार्मिक से सम्बन्धित न होकर सभी सम्बन्धित कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम होता है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सभी कार्मिकों में से सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका

एक अधिकारी की होती है जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक प्रबन्धक /अधिकारी /नेतृत्वकर्त्ता के तौर पर कार्य करता है।

एक अधिकारी में सबसे पहले नेतृत्व कौशल का होना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसी कौशल के बल पर कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए भी निर्धारित लक्ष्यों को तय समय सीमा में प्राप्त किया जा सकता है।

यद्यपि नेतृत्व कौशल का गुण व्यक्ति विशेष में जन्मजात होता है परन्तु इसे विभिन्न प्रशिक्षणों एवं बाह्य कारकों के प्रभावकारी प्रयोग से तराशा जा सकता है। नेतृत्व कौशल के अंतर्गत समूह के सभी सदस्यों की गुणवत्ताओं का तय समय सीमा में अधिकतम उपयोग करते हुए लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करना है। इसके अंतर्गत एक अधिकारी अपने अधीनस्थों की खूबियों का अधिकतम उपयोग करते हुए उनकी क्षमताओं से अधिक परिणाम प्राप्त कर सकता है।

नेतृत्व कौशल के अंतर्गत संवाद, निर्णय लेना, निर्देश देना, प्रेरित करना, प्रभावी ढंग से कार्य सौंपना एवं मार्गदर्शन महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा कौशल है जो जीवन के हर क्षेत्र में प्रभावकारी एवं उपयोगी है।

कार्यालय में एक अधिकारी नेतृत्व कौशल के आधार पर ही निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। इसी के आधार पर अपने अधीनस्थों को भी प्रेरित करते हुए उनकी क्षमताओं में

भी सुधार किया जा सकता है। इसी क्रम में कर्मचारियों को उनके द्वारा किए गए प्रयासों के लिए सराहना एवं कमियों को सुधारने के लिए प्रेरित करना भी अति आवश्यक है।

नेतृत्व कौशल के अंतर्गत एक अधिकारी को अलग-अलग कार्य करते हुए सभी के साथ सामंजस्य बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है। इसके अंतर्गत लक्ष्यों की प्राप्ति भी समूह के प्रयासों के परिणामों का आंकलन होता है तथा यदि लक्ष्य प्राप्ति में कोई कमी रह गयी है तो किसी विशेष समूह सदस्य की कमी न होकर सभी की कमी होती है । इसके निदान के लिए सराहना, प्रेरणा एवं प्रभावकारी ढंग से कार्य का आंकलन करके बांटा जाना चाहिए।

विभिन्न तरह के प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं एवं अस्थायी तौर पर किसी परियोजना के लिए मुखिया के तौर पर कार्य करते हुए इस कौशल का विकास किया जा सकता है।

सुश्री लक्ष्मी रानी
स.लेखा अधिकारी

मेरा नवोदय

नवोदय विद्यालय में मेरा सफर

नवोदय विद्यालय में मेरा सफर एक अविस्मरणीय और जीवन-परिवर्तनकारी रहा है। यहाँ बिताए गए वर्षों ने न केवल मेरी शैक्षणिक योग्यता को निखारा, बल्कि मुझे आत्मनिर्भरता, अनुशासन और विविध संस्कृतियों के प्रति सम्मान का पाठ भी पढ़ाया। नवोदय विद्यालय की स्थापना सन् 1986 में हमारे पूर्व माननीय प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी द्वारा ग्रामीण बच्चों के सर्वांगीण विकास की भावना के साथ की गई थी।

पहला दिन और नए अनुभव

जब मैंने पहली बार नवोदय विद्यालय में अपने बक्शे के साथ (जो कपड़ों, आवश्यक वस्तुओं तथा खाने की चीजों से भरा हुआ था) कदम रखा, तो मन में उत्सुकता और घर से दूर होने की घबराहट थी। वह दिन 1 जुलाई 2005 का था। नया वातावरण, नए साथी और हॉस्टल जीवन की नई चुनौतियाँ थीं। नवोदय बहुत ही सुंदर बना हुआ था यहाँ बहुत सारे पेड़ पौधे

थे। अब से अपना सारा काम खुद ही करना था। पहले दिन ही शाम को देखा कि सभी बच्चों को लाइन लगाकर भोजनालय जाना था। भोजनालय में भोजन लेने के बाद सभी बच्चों ने एक साथ भोजन मंत्र के बाद भोजन प्रारंभ किया। सभी शिक्षकों से वार्तालाप हुआ और उसी दिन हमें हमारा पूरा रूटीन बताया गया। अगले दिन से हम उसी प्रकार सभी कार्य करने लगे। अगले दिन सुबह 5 बजे उठकर हम व्यायाम करने मैदान में पहुँच गए। व्यायाम करने के बाद हमें चने खाने को दिए गए। फिर नहाने के लिए लंबी लाइन में लगे और नहाकर नाश्ता करने चले गए। उसके बाद भागकर अपने अकादमिक हॉल में पहुँच गए, जहाँ पहली बार "हम ही नवोदय हों" प्रार्थना सुनी, जिसे सुनकर रोंगटे खड़े हो गए। इसके बाद कक्षाओं में अध्ययन किया। फिर दोपहर का भोजन करके थोड़ी देर आराम किया और फिर एक घंटे के लिए पढ़ने चले गए। उसके बाद शाम को खेलकूद के लिए मैदान पहुँच गए, जहाँ हमें अरावली, नील गिरी, शिवालिक और उदय गिरी सदन में बाँट दिया गया। अब ये सदन ही हमारी पहचान बन गए थे। हाथ-पैर धोकर हम रात का भोजन करने गए। कुछ घंटे पढ़ाई करने के बाद हम 10 बजे सो गए। पहला दिन बहुत अच्छा गया अब ये ही हमारी दिनचर्या थी।

रविवार की प्रतीक्षा और घर की याद

हर रविवार को बच्चों को अपने माता-पिता के आने का इंतजार रहता था। रविवार को सुबह से ही बच्चों का रोना शुरू हो जाता था, क्योंकि वे घर की याद में व्याकुल होते थे। घरवालों से मिलने का यह दिन बहुत कीमती था। हर सप्ताह के बाद अब मम्मी-पापा ने महीने में एक बार आना शुरू किया और घर से एक महीने का खाने का सामान भी लाने लगे। हम सभी मित्र मिलकर उसे कुछ ही दिनों में चट कर जाते थे। धीरे-धीरे, नवोदय विद्यालय ही मेरा दूसरा परिवार बन गया। यहाँ के लोग सुख-दुख में मेरे साथ खड़े रहते थे। अब नवोदय के नियमों और दिनचर्या के साथ तालमेल बैठ चुका था। सुबह की पीटी, कक्षाएँ, शाम के खेल, और रात का अध्ययन सत्र—सभी ने मेरे दैनिक जीवन को संरचित कर दिया था।

विविध संस्कृतियों और भाषा का परिचय

नवोदय विद्यालय की सबसे खास बात यह है कि यहाँ जिले के विभिन्न हिस्सों से आए छात्र एक साथ रहते हैं। साथ ही अध्यापक भी देश के विभिन्न स्थानों से आते हैं, जिससे हमें विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं को समझने और सम्मान करने का अवसर मिला। इस दौरान हमें मराठी भाषा भी सिखाई गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, त्योहारों और अन्य गतिविधियों के माध्यम से हमने एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखा।

शैक्षणिक और जीवन मूल्यों की शिक्षा

यहाँ के शिक्षकों ने हमें हमेशा माता- पिता की तरह ही प्यार दिया। शैक्षणिक दृष्टिकोण से, शिक्षकों ने हमें न केवल पाठ्यक्रम की सामग्री सिखाई, बल्कि जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों का भी ज्ञान दिया। उनके मार्गदर्शन में, मैंने कठिन विषयों को समझा और आत्मविश्वास प्राप्त किया।

आत्मनिर्भरता और हॉस्टल जीवन

हॉस्टल जीवन ने मुझे आत्मनिर्भर बनना सिखाया। सुबह 5 बजे से उठकर रात 10 बजे तक अपना सारा कार्य स्वयं ही करना होता था। अपने सामान की देखभाल करना, समय पर कार्य पूरे करना और साथियों के साथ मिल-जुलकर खेलना और रहना सिखाया। सप्ताह में एक बार ही टीवी दिखाई जाती थी, इसलिए बाकी के दिनों में हम आपस में घर से देखी हुई फिल्मों और नाटकों की कहानियाँ सुनकर मनोरंजन करते थे।

प्राकृतिक सौंदर्य और प्रतिस्पर्धाएँ

हमने नवोदय में पेड़-पौधे भी लगाए थे। हर शनिवार को एक प्रतियोगिता होती थी, जिसमें सभी बच्चे बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। हिंदी पखवाड़े का आयोजन 14 सितम्बर से 28 सितम्बर तक होता था, जो हमें बहुत मजा देता था। यहाँ कवि

सम्मेलन भी आयोजित होते थे। खेलकूद और अन्य कार्यक्रमों के लिए नवोदय के बच्चे दूसरे जिलों के नवोदय विद्यालय भी जाते थे, जिससे हमें एक नई खुशी मिलती थी।

विदाई का समय और भावनाएँ

समय बीतते-बीतते, न जाने कब 12वीं की परीक्षा हो गई और सभी को विदाई देते हुए हमारे विदाई समारोह का दिन आ गया। कहाँ नवोदय से भाग जाने का मन होता था और आज हमारे मन में रुकने की इच्छा थी, क्योंकि नवोदय अब हमारा दूसरा घर बन चुका था। सभी की आँखों में आँसू थे– शिक्षक और बच्चे सभी रो रहे थे। हम इस विदाई को सहज रूप से नहीं स्वीकार पा रहे थे। अंत में, जब हम नवोदय को छोड़ने लगे, तो कई बार पलटकर देखा। अब मुझे यह समझ में आया कि नवोदय को भूल पाना सच में नामुमकिन है।

नवोदय विद्यालय ने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी। यहाँ की शिक्षा, अनुशासन, और संस्कृतियाँ मेरे जीवन का हिस्सा बन चुकी हैं। आज भी जब मैं नवोदय के बारे में सोचती हूँ, तो मेरे दिल में एक अपार गर्व और प्यार महसूस होता है। यह विद्यालय मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण और अद्वितीय अनुभव है।

सुश्री लवी आर्या
स.लेखा अधिकारी

अदृश्य ताकतें: कहानियों से सच्चाई तक

मेरी बचपन की दोस्त, वंदना, जो बचपन से ही मेरी विश्वासपात्र और शरारतों में साथी रही है, ने मुझे गाँव में अपने घर पर देवी माँ के पाठ में आमंत्रित किया। स्वादिष्ट भोजन, रंग-बिरंगी सजावट और उत्सवी सभा के वादे ने मुझे पतंगे की तरह आग की ओर आकर्षित किया। मैंने उत्सुकता से उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया, इस बात से अनजान कि यह घटना मेरे दिल में एक भयावह याद को उकेर देगी, जो हमेशा के लिए मेरी मान्यताओं को चुनौती देगी।

पाठ के दिन, माहौल भक्ति और आनंद से भरा हुआ था। परिवार इकट्ठा हुए, उनके चेहरे उत्साह से चमक रहे थे क्योंकि वे हँसी और कहानियाँ साझा कर रहे थे। मसालों की सुगंधित खुशबू हवा में फैल रही थी, जो भजनों के लयबद्ध जाप के साथ मिल रही थी जिसने हमें आध्यात्मिकता के आवरण में लपेट दिया था। चमकीले रंगों ने जगह को सजाया-

संवारा, गेंदे की माला, टिमटिमाते तेल के दीये और देवी माँ को समर्पित एक खूबसूरती से सजाई गई वेदी। यह देखने लायक नजारा था, संस्कृति और आस्था का एक अनूठा संगम।

जैसे ही हम बैठे, वंदना एक आकर्षक परंपरा साझा करने के लिए झुकी: समारोह के दौरान, यह माना जाता था कि देवी माँ परिवार के किसी सदस्य के शरीर में प्रवेश कर सकती हैं, जिससे वे हाँ या नहीं के प्रारूप में सवालों के जवाब देकर संवाद कर सकते हैं। युवा जिज्ञासा से भरे और उत्सुक, वंदना और मैंने यह पूछने की योजना बनाई कि क्या मुझे सरकारी नौकरी मिलेगी- इस अवसर की गंभीरता के बीच एक मासूम और हल्की-फुल्की पूछताछ।

लेकिन जैसे-जैसे पाठ आगे बढ़ा, कमरे में ऊर्जा नाटकीय रूप से बदल गई। अचानक, वंदना की चाची बेतहाशा नाचने लगीं, उनकी हरकतें अनियमित और अनियंत्रित थीं, जैसे कि उनके नियंत्रण से परे किसी शक्ति ने उन्हें जकड़ लिया हो। कमरे में चारों ओर चीख-पुकार गूंज उठी क्योंकि सभी ने मान लिया था कि देवी माँ उनके भीतर प्रकट हुई हैं। जब मैंने उन्हें घूमते और झूमते हुए देखा, तो मुझे विस्मय और घबराहट का मिश्रण महसूस हुआ, जो एक परमानंद में खो गई थी। फिर भी, मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने अपने लिए बिछाए गए लाल कपड़े पर बैठने से इनकार कर दिया - दिव्य संचार के लिए निर्दिष्ट स्थान।

फिर, एक पल में, माहौल उत्साह से भय में बदल गया। वंदना की चाची बेहोश हो गई, उसकी चीखें हवा में गूंज रही थीं और वह परिवार को कोसने लगी, उसके शब्दों में एक अजीब क्रोध था। डर की एक ठंडी लहर मुझ पर छा गई; मैं उसके ठीक बगल में बैठी थी, दिल की धड़कनें तेज़ हो रही थीं क्योंकि मैं इस भयावह दृश्य को देख रही थी। उसके चाचा उसके पास भागे, उनके चेहरे पर चिंता का मुखौटा था, और उन्होंने उसे जल्दी से दूसरे कमरे में ले जाया, जिससे सभा में भ्रम और चिंता की लहर दौड़ गई।

एक अवास्तविक मोड़ में, उसके फूफा जी ने जल्द ही केंद्र मंच पर कब्जा कर लिया। उन्होंने भक्ति के उत्साह को मूर्त रूप देते हुए जोश से नाचना शुरू कर दिया, जबकि भीड़ "जय माता दी!" के नारे लगा रही थी - एक गूंजती जयकार जिसने हवा को एक मादक ऊर्जा से भर दिया। जब वह बेहोश हो गए और लाल कपड़े पर बैठ गए, तो कमरे में सन्नाटा छा गया। परिवार के सदस्य उत्सुकता से उससे सवाल पूछने लगे, और मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने सिर हिलाकर जवाब दिया, उनकी आँखें चमक रही थीं जैसे कि वह किसी मदहोशी में हो। इस बीच, वंदना की चाची धीरे-धीरे होश में आ गई, उसकी अभिव्यक्ति शांत थी, जैसे कि वह बस एक सपने से जागी हो। वह रात के खाने के लिए हमारे साथ शामिल हुई, बातें कर रही थी और हँस रही थी, उसकी पिछली उथल-पुथल भूल गई थी।

मैं वहाँ बैठी थी, उसकी उदासीनता और मेरे अपने डर के बीच के अंतर को समझ रही थी। इतना गहरा अनुभव इतनी सहजता से कैसे हो सकता है? ऐसा लगा जैसे मैं एक अलग वास्तविकता में कदम रख चुकी हूँ, जहाँ असाधारणता रोजमर्रा की जिंदगी के ताने-बाने में बुनी हुई है। जब मैं खाने की मेज पर बैठी, हँसी और खुशी की कहानियों से घिरी हुआ, मुझे एक गहरी असंगति महसूस हुई। जिस सामान्यता के साथ वंदना के परिवार ने इस घटना को स्वीकार किया, उसने मुझे हैरान कर दिया। मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा था जब मुझे एहसास हुआ कि मेरे संदेह को चुनौती दी गई थी; इस अनुभव ने उन विश्वासों में संदेह के बीज बो दिए थे जिन्हें मैंने दृढ़ता से पकड़ रखा था। उसके बाद के दिनों में, मैंने खुद को उस रात की घटनाओं पर गहराई से चिंतन करते हुए पाया। इस अनुभव ने मुझे आस्था, विश्वास और अज्ञात की जटिलताओं का सामना करने के लिए मजबूर किया। जबकि मैं हमेशा से ही ऐसा करती आई हूँ।

मैंने ऐसी घटनाओं को महज लोककथा के रूप में खारिज कर दिया था, उन क्षणों की तीव्रता को देखकर मेरे मन में सवाल उठने लगे: क्या होगा अगर इस दुनिया में आंखों से दिखने वाली चीज़ों से कहीं ज़्यादा कुछ है? क्या होगा अगर आध्यात्मिक और सांसारिक क्षेत्र आपस में इस तरह से जुड़े हों, जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था?

धीरे-धीरे, मैंने इस विचार को अपनाना शुरू कर दिया कि दुनिया में ऊर्जा का एक नाजुक संतुलन मौजूद है- सकारात्मक और नकारात्मक ताकतें जो हमारे जीवन को गहन तरीकों से प्रभावित करती हैं। वंदना की चाची का जंगली नृत्य और उसके फूफा जी की मदहोशी जैसी स्थिति अस्तित्व के एक बड़े ताने-बाने की ओर इशारा करती है, जहाँ अदृश्य ऊर्जाएँ शक्तिशाली, कभी-कभी भयावह तरीकों से प्रकट हो सकती हैं। इस अहसास ने मुझे घबराहट और मोह दोनों से भर दिया।

मेरी दोस्त के घर पर यह अनुभव अलौकिकता की मेरी समझ का आधार बन गया, जिसने मेरे अतीत को एक नई जिज्ञासा के साथ जोड़ दिया। मैं उस छुट्टी से डर और मोह के मिश्रण के साथ उभरी, उन रहस्यों का पता लगाने के लिए उत्सुक थी जो हमारी समझ के पर्दे से परे हैं। मुझे एहसास हुआ कि जिन कहानियों को मैंने एक बार खारिज कर दिया था, उनमें गहरी सच्चाई हो सकती है, और मुझे अज्ञात की ओर खींचा गया - एक ऐसी यात्रा जो मुझे वास्तविकता की प्रकृति पर ही सवाल उठाने के लिए प्रेरित करेगी।

अंत में, मुझे समझ में आया कि विश्वास केवल एक द्विआधारी विकल्प नहीं है; यह एक स्पेक्ट्रम है जो हमारे अनुभवों के साथ विकसित होता है। और जब मैं इस नई समझ की दहलीज पर खड़ी थी, तो मुझे पता था कि मैं अपने आस-पास की अदृश्य दुनिया के रहस्यों को उजागर करना शुरू कर रही हूँ।

श्री सुखदेव गोयल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

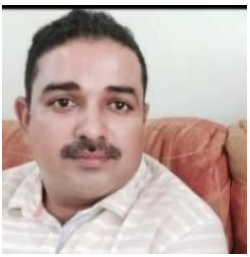

भारत में शिक्षण का बदलता स्वरूप

मानव के सांस्कृतिक एवं सामजिक ढांचें में सतत बुनियादी बदलाव होते आ रहे हैं। इसी क्रम में समाज एवं संस्कृति के साथ साथ इस बदलाव में शिक्षा का एवं इसकी शैक्षणिक पद्धतियों का भी योगदान रहा है। शिक्षा और समाज एक दूसरे के पूरक हैं।

शिक्षा के फलस्वरूप ही समाज के ताने बाने में सकारात्मक स्तरों पर आशातीत बदलाव हुए हैं। इन बदलावों के लिए शिक्षा के बदलते स्वरूप एवं शिक्षण के तौर तरीके को ही आधार माना गया है।

मानव जब से समूहों में रहने लगा तब से शिक्षण का कार्य एवं इसके विभिन्न अलग-अलग तौर तरीके अपनाए जाने लगे। इसको मुख्यत: दो बिन्दुओं से समझा जा सकता है :-

(क) शिक्षण की प्राचीन पद्धतियाँ

(ख) शिक्षण की आधुनिक पद्धतियाँ

शिक्षण के स्वरूपों के अंतर्गत प्राचीन पद्धति में गुरु शिष्य परम्परा का प्रचलन था। इसके अंतर्गत धार्मिक शिक्षण के साथ साथ विभिन्न वैदिक शिक्षा पद्धति पर जोर दिया जाता था। इसके अंतर्गत वैदिक शिक्षा के साथ साथ युध्द कौशल एवं जीवन की नीतिगत शिक्षाओं पर जोर दिया जाता था। यह शिक्षण मुख्यत: गुरुकुलों में संस्कृत माध्यम में होता था। इसके अंतर्गत विभिन्न कौशल सिखाने पर जोर दिया जाता था।

कालांतर में शिक्षण का स्वरूप विद्यालयी एवं औपचारिक शिक्षा के तहत बदल गया है। इसके अंतर्गत मुख्यत: किताबी शिक्षण पर जोर दिया जाता है। इसके अंतर्गत परीक्षा में अधिकतम अंक अर्जित करने के तौर तरीके एवं रटंत शिक्षण पर जोर दिया जाता है।

भारत में शिक्षण के बदलते स्वरूप के अंतर्गत नई शिक्षा नीति के बाद प्राथमिक स्तर तक मातृभाषा में मनोवैज्ञानिक एवं प्रयोगात्मक शिक्षण के तहत शिक्षण को रुचिकर एवं आसानी से समझने योग्य बनाया जा रहा है। मनोवैज्ञानिक शिक्षण के अंतर्गत विभिन्न चरणों को अपनाया जाता है। इसके अंतर्गत छात्र-छात्राओं के मानसिक स्तर एवं कौशल के आधार पर अलग अलग समूहों में शिक्षण करवाया जाता है। मनोवैज्ञानिक शिक्षण

से ही जल्दी सीखने की अवधारणा को मूर्त रूप दिया जा सकता है।

मनोवैज्ञानिक शिक्षण के अंतर्गत सकारात्मक अधिगम के लिए मुख्यतः चार चरण अपनाए जाते हैं।

01.अमूर्त अवधारणा

02.अनुभव

03.सक्रिय प्रयोग

04.नैदानिक प्रयोग

इसके तहत इन चारो-चरणों को अलग अलग स्तर पर अपनाकर विद्यालयी एवं उच्च स्तर के शिक्षण में आशातीत परिणाम प्राप्त किए जा सकते है । इसके अंतर्गत शिक्षकों को भी मनोवैज्ञानिक शिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है । मनोवैज्ञानिक शिक्षण के लिए प्रशिक्षुओं को विभिन्न परीक्षणों के उपरांत उनके बौद्धिक स्तर के आधार पर उन्हें अलग अलग समूहों में बांटकर शिक्षण को प्रभावी तरीके से किया जा सकता है ।

वर्तमान में शिक्षण पद्धतिमें शिक्षा का व्यवसायीकरण कर दिया गया है । कालांतर में विद्यालयी शिक्षा पद्धति खत्म होती जा रही है तथा सिर्फ कोचिंग शिक्षण ही प्रभावी रह गया है। जिसके दुष्परिणाम समाज में देखने को मिल रहे है। वर्तमान में शिक्षण के स्तर के अंतर्गत छात्र-छात्राओं के बौद्धिक स्तरों

को उनके द्वारा अर्जित अंकों को ही माना जाता है। जिसके फलस्वरूप कम अंक अर्जित करने वाले छात्र छात्राएं हीन भावनाओं से ग्रसित हो जाते है।

इन सभी समस्याओं से निजात पाने के लिए वर्तमान में प्राथमिक स्तर पर प्रयोगात्मक तौर पर ग्रेडिंग परिणाम को लागू किया गया है। माध्यमिक स्तर पर भी संबंधित बोर्ड्स द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय मेरिट छात्र-छात्राओं की सूची जारी करने पर रोक लगा दी गयी है। विभिन्न राज्य सरकारों ने व्यावसायिक स्तर पर चलने वाली कोचिंग कक्षाओं के लिए भी मानक एवं विभिन्न नियमवाली जारी की है।

शिक्षण को प्रभावी एवं कारगर बनाने के लिए मनोवैज्ञानिक शिक्षण नितांत आवश्यक है। इसके प्रभावकारी क्रियान्वयन के लिए धरातल पर प्रयास किए जाने चाहिए । वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक शिक्षण से ही वास्तविक एवं सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। इस शिक्षण के अंतर्गत रटंत विद्या पर जोर देने की बजाय छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता बढ़ाने पर जोर देने की आवश्यकता है।

श्री सुमन सौरभ
(एम टी एस)

सड़कों पर हमारा धर्म

कभी-कभी हमारे दैनिक जीवन मे बिल्कुल अजनबी लोग हमारे रास्ते मे आ जाते है और अपने नेक और उदार कार्यों से हमेशा के लिए अपनी छाप छोड़ जाते है। मेरे पास साझा करने के लिए कुछ ऐसे उदाहरण हैं।

भारी बारिश के कारण दिल्ली की सड़के जलमग्न हो गयी थी। पानी से भरे गड्ढे जलमग्न सड़कों से गुजरने वालों के लिए जानलेवा साबित हो रहे थे। तेज गति से गुजर रही बसों के कारण दोनों तरफ भारी मात्रा में पानी बह रहा था, जिससे भागते हुए पैदल यात्री भीग रहे थे।

मैं सड़क पार करने ही वाला था कि एक कार बहुत तेज रफ्तार से मेरी तरफ बढ़ी। जैसे ही वह मेरे करीब आई, मैंने खुद को कीचड़ के हवाले कर दिया। लेकिन ड्राईवर ने अचानक अपनी गति धीमी कर दी और मुझे बिना किसी बाधा के दूसरी तरफ पहुचते हुए देख मुस्कुराया और हाथ हिलाया, फिर अपनी

गति बढ़ाई और ट्रफिक में गायब हो गया। कितना बढ़िया इंसान है! मैं उसके विचारशील होने के लिए उसका सम्मान करता हूँ।

एक बार प्रयागराज में परीक्षा भवन से बाहर निकलते समय मुझे होटल तक जाने के लिए कोई वाहन नहीं मिला। खतरनाक बादल घिरने लगे थे और ऐसा लग रहा था कि किसी भी पल बारिश होने वाली हैं। मैं चौड़ी सड़क पर बने आलीशान घरों के पास से गुजरता हुआ बेसब्री से खाली टैक्सी की तलाश कर रहा था।

अचानक एक शानदार बंगले के सामने एक चमचमाती लिमोजीन मेरे पास आकर रुकी। गाड़ी में साफ-सुथरे कपड़े पहने एक सिख सज्जन बैठे थे। मैंने उन्हें अपनी परेशानी बताई और होटल सुंदरम की ओर जाने के लिए लिफ्ट मांगी। उन्होने कुछ देर तक सोचा और फिर एक मुस्कान के साथ जैसे किसी आवेग मे, उन्होने मुझे गाड़ी मे बैठने के लिए कहा।

होटल मेरी अपेक्षा से दूर निकला। लेकिन वो मुझे गेट तक ले गया और मैंने उनसे हाथ मिलाया। मुझे उम्मीद थी कि वो आगे बढ़ेगा लेकिन जल्दी से उसने यू-टर्न लिया और गायब हो गया।

मेरे आश्चर्य और कृतज्ञता पर विचार करे! जब यह स्पष्ट हो गया कि उसने वास्तव में मुझे अपने घर के ठीक

सामने से लिफ्ट दी थी, जहां वास्तव में वह अंदर प्रवेश करने के लिए अपनी गति धीमी कर रहा था।

आज भी मुझे इस बात का अफसोस है कि मैं इस अज्ञात उपकार का समुचित रूप से धन्यवाद नहीं कर सका।

श्री सोमदत्त यादव
क.हिंदी अनुवादक

सुख दुःख में समभाव

जीवन के हर रंग और रुप में से भी कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। सुख-दु:ख को देखने का हमारा दृष्टिकोण अलग-अलग होता है। अक्सर हमें अपने दु:ख बड़े लगते हैं और ऐसे में दुख को गाने की ऐसी लत लग जाती है कि हम लोगों की सहानुभूति का फायदा भी उठाना चाहते हैं। तुमने जिंदगी देखी है... तुम्हें क्या पता दु:ख क्या होता है...? मेरी किस्मत में सुख कहां... पता नहीं मेरे दुर्दिन कब खत्म होंगे... ऐसी कई बातें कहते हुए हम बिल्कुल दार्शनिक हो जाते हैं। हम ऐसे ज्ञानी बन जाते हैं, जिन्हें अपना राई बराबर दु:ख भी पहाड़ नजर आता है।

असल में कर्मबंधन से बंधे जीव ऋणानुबंध चुकाने के लिए हमारे चारों और अवतरित हुए हैं। सुख के लिए जीव की तड़प से जुड़ी एक लोककथा मुझे याद आ रही है।एक बार एक संत मंदिर में बैठकर भगवान की भक्ति में लीन थे। चारों तरफ प्रकाश फैला था। तभी अचानक झरोखे से एक पक्षी अंदर आ गया। वह कुछ देर तक तो अंदर इधर-उधर फड़फड़ाता रहा।

फिर बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। कभी वह इस कोने से निकलने की कोशिश करता तो कभी उस कोने से। उसकी छटपटाहट बढ़ती जा रही थी। कभी वह दीवार से टकराता तो कभी छत से। किंतु उस तरफ नहीं जाता, जिस रास्ते से वह अंदर आया था। संत बहुत ध्यान से देखते जा रहे थे। उन्हें चिंता हो रही थी कि उसे कैसे समझाए कि जैसे अंदर आने का रास्ता निश्चित है वैसे ही बाहर जाने का रास्ता भी निश्चित है। द्वार तो वही होता है, परंतु आए थे उसके बिल्कुल उलट दिशा में होता है। दिशा बदल जाती है। संत उसे जितना बाहर निकालने की कोशिश करते, उतना ही वो पक्षी घबरा जाता और बेचैन होने लगता कि ये संत उसे मारने आये हैं। ठीक इसी प्रकार हम भी इस संसार में आकर इस परिंदे की तरह उलझ जाते हैं। जब हम जीवन में प्रवेश कर जाते हैं। तब हमारे पास उससे निकलने का रास्ता तो होता है परंतु अज्ञान के कारण हम उस रास्ते को देख नहीं पाते। जीवन के प्रपंच हमें भांति-भांति से कष्ट पहुँचाते रहतें हैं, और हम छटपटाते रहतें है। इसी पंछी की तरह।

यदि उस दिशा में जाने में हमें सफलता मिलती है तो हम खुश होते हैं और यदि असफलता मिलती है तो हम कष्ट महसूस करते हैं। सुख भी एक संवेदना है, दुख भी एक संवेदना है।इस संदर्भ में हमें प्रकृति से सीख लेनी चाहिए। प्रकृति के हर रंग और रुप में से कुछ सीखने को मिलता है। सूरज,चंद्रमा, पशु, पक्षी, पेड़, पौधे, समुद्र, नदियाँ, पर्वत, झरने प्रकृति के

अभिन्न अंग हैं। सूर्य, चंद्र, समुद्र में आते ज्वार-भाटा, ग्रह, नक्षत्र सब नियम से चलते हैं। नियमितता का सबक उनमें से ही मिलता है। पक्षी अपने पंखों की ताकत से उंची उड़ान भरते है। अगर पूरी ताकत लगाकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ा जाए तो वह अवश्य सिद्ध होता है। पर्वत की तरह अडिग रहकर अपना ध्येय हमेशा ऊँचा रखना चाहिए। नदियाँ समुद्र में जाकर मिलती है और समर्पण का संदेश देती हैं।

मनुष्य को चाहिए कि उसका दिल समुद्र की तरह-बड़ा और गहरा हो जिसमें गुणों का न खत्म होनेवाला भंडार हो। काँटों में रहकर भी हँसनेवाले फूलों से मुश्किल और तकलीफ में भी हँसने की सीख मिलती है। पानी में तैरती मछलियाँ चपलता का एहसास कराती हैं। पेड़ का साया और उसके फल, पेड़ के खुद के काम नहीं आता। इससे दूसरों के लिए जीने का और दूसरों के काम आने का संदेश मिलता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमें सोचना चाहिए कि सुख-दु:ख चिरकालिक नहीं हैं कहा भी जाता है कि यदि अच्छा समय नहीं रहा, तो रहना खराब को भी नहीं है। सुख-दुख की अनुभूति से परे होकर जब हम कोई राह पकड़ते हैं, तो वह आनंद का होता है।

श्री हिमांशु धर्मदर्शी
प्रधान महालेखाकार

मैं अपने पैसे खा रहा हूँ!

मुल्ला नसरुद्दीन अपनी व्यंग्य से भरी शिक्षाप्रद कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं। कभी-कभी एक छोटी सी दिखने वाली घटना के माध्यम से वे हमें एक बड़ा सबक दे जाते हैं। उनकी ऐसी ही एक कहानी कुछ यूं है।

एक बार मुल्ला भारत के दौरे पर थे। बाज़ार में उन्होंने सुंदर और मसालेदार लाल फल देखे। उन्होंने उन्हें खरीदा और जब पहला फल चखा, तो वह बहुत तीखा लगा। मुंह जल गया फिर भी उन्होंने खाना बंद नहीं किया। किसी ने कहा, "मुल्ला, आप क्या कर रहे हैं? ये तो तीखी मिर्च हैं!"
मुल्ला का जवाब बेहद अर्थपूर्ण था,

"मैं मिर्च नहीं खा रहा, मैं अपने पैसे खा रहा हूँ!"
यह साधारण सा दिखने वाला वाक्य, है बहुत गहरा।

मैं सोचता हूँ कि जीवन में कितनी बातें ऐसी हैं जब मुझे उन्हें छोड़ देने की आवश्यकता होती है, लेकिन मैं उन में फंस जाता हूँ क्योंकि मैंने अपने पैसे, शक्ति, समय, मेहनत और भावनाओं का उनमें निवेश किया हुआ होता है। मुझे यह

समझने की जरूरत है कि इन चीज़ों को जल्दी छोड़ने में ही मेरी सुख-शांति है।

ज्ञानी कहते हैं कि महाभारत में सभी सवालों के जवाब हैं। युधिष्ठिर अपना सब कुछ हार जाने के बाद भी जुआ खेलना नहीं छोड़ पाए और दुर्योधन अपने विशाल राज्य में से केवल पांच गांव!

बाज़ार में बंदर से जमूरे का खेल कराने वाला मदारी उसे कैसे पकड़ता है?

पहले तो वह एक मजबूत लकड़ी की पेटी बनाता है और उसमें मूंगफली डालता है। पेटी एक जगह पर जमा देता है। पेटी में एक छोटा सा छिद्र होता है। बंदर उसमें हाथ डालकर मूंगफली से मुट्ठी भरता है। पेटी के छोटे से छिद्र में मुट्ठी बांधने के कारण बढ़ा हुआ हाथ फंस जाता है। अगर बंदर हाथ खोल दे, तो उसका हाथ आसानी से बाहर निकल सकता और वह भाग सकता है। लेकिन मूंगफली के लालच में वह अपना हाथ नहीं छोड़ता और मदारी उसे आसानी से पकड़ लेता है।

साहिर लुधियानवी की एक प्रसिद्ध नज़्म के शब्द हैं, "वो अफ़साना जिसे अंजाम तक लाना न हो मुमकिन, उसे इक ख़ूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना अच्छा।"

कुछ रिश्तों, नौकरियों, सत्ता के लालच में हम मूंगफली से मुट्ठी भर लेते हैं और फिर परिवार की इज्ज़त या सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर उसका बोझ पूरी ज़िंदगी उठाते हैं। उसे किसी मोड़ पर छोड़ना हमें नहीं आता। इसलिए हम ग़लत कहते हैं

कि यह मिर्च तीखी नहीं है। कभी-कभी यह जकड़न हमारी सामाजिक पहचान बन जाती है।

मनुष्य की तृष्णा का कहां कोई अंत है? एक इच्छा पूरी होते ही दूसरी जन्म ले लेती है और हर इच्छा जन्म से ही मूंगफली की पेटी साबित होती है। कितनी बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें छोड़ कर हमें आगे बढ़ना होता है, लेकिन हर बार किसी न किसी कारणवश हम अपने आपको बांध लेते हैं। कभी लालच, अहंकार, मोह, उम्मीद के कारण और कभी-कभी अज्ञानतावश।

कब पकड़ना है और कब छोड़ना है, जब हमें समझ में आ जाता है तब बहुत सी परेशानियां खत्म हो जाती हैं। कठिनाई इस बात में है कि कब छोड़ना है, यह हम तय नहीं कर पाते। हम मुट्ठी खोल नहीं पाते और फिर पकड़े जाने का दर्द सहते हैं।

जब ख़ुद से थोड़ा दूर हटकर मैं देखता हूँ तो समझ आता है कि मैं भी इसी जाल में फंसा हुआ हूँ।

कब मैं अपने पैसे खाना बंद करूंगा?

कब हाथ खोलकर लालच से मुक्त होकर बाहर निकल सकूंगा?

किसे ख़बर!

यदि हम यह समझ पाते कि क्या छोड़ना है और कब क्या पकड़ना है, तो जीवन कितना सरल हो जाता...

ऑडिट दिवस के अवसर पर आयोजित पदयात्रा के दृश्य

खांडवी की रेसिपी

सामग्री-

खांडवी बनाने के लिए 100 ग्राम बेसन, एक कप दही,¼ छोटी चम्मच हल्दी, आधा चम्मच अदरक का पेस्ट, नमक स्वादानुसार, एक टेबल स्पून तेल, थोड़ी सी राई, थोड़े से कढ़ी पत्ते, 2-3 हरी मिर्च, हरा धनिया बारीक कटा हुआ, एक बड़ा चम्मच कद्दूकस किया हुआ नारियल।

बनाने की विधि-

सबसे पहले एक बर्तन में दही और बेसन को अच्छी तरह मिला लीजिए। इस घोल में पानी, हल्दी, अदरक का पेस्ट और नमक डाल दीजिए। (घोल में गुठलियां नहीं पड़नी चाहिए) घोल को किसी भारी तले के बर्तन में डाल दीजिए, उस बर्तन को गैस पर रखिए और उस घोल को लगातार चम्मच से चलाते रहिए। इस घोल को 8-9 मिनट गाढ़ा होने तक पकाए। पकी हुए खांडवी के घोल को एक दूसरे बर्तन में अच्छे से फैला दीजिए। जब यह ठंडा हो जाए तो चाकू से इसके छोटे-छोटे पीस काट लीजिये। अब एक कढ़ाई में तेल गरम करके इसमें थोड़ी सी राई, करी पत्ते और कटी हुई मिर्च डाल दीजिए। जब यह भुन जाए तो पीस किए हुए खांडवी के ऊपर डाल दीजिए। और फिर कद्दूकस किए हुए नारियल और कटा हुआ हरा धनिया खांडवी के ऊपर डालिए। हरे धनिये की चटनी के साथ खांडवी को परोसिए और खाइए।

जूनागढ़ रियासत

जूनागढ़ गुजरात के पश्चिम में स्थित रियासत थी। जिसकी स्थापना बाबई पठान (पश्तूनों) द्वारा 1807 में की गई थी। तब से लेकर 1948 तक जब तक इसका विलय भारत संघ में नहीं हो गया, यह रियासत ब्रिटिश आधिपत्य के अधीन रही। जूनागढ़ रियासत को ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा 13 तोपों की सलामी दी जाती थी। मोहम्मद महावत खान तृतीय जूनागढ़ के अंतिम नवाब थे, जिन्होंने विभाजन के समय इस रियासत के पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी थी। लेकिन बहुसंख्यक आबादी हिन्दू होने के कारण जनता ने नवाब के इस निर्णय का विरोध किया। सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा सैन्य कार्यवाही के तहत जूनागढ़ को भारतीय परिक्षेत्र में सम्मलित किया गया एवं इसके बाद जनमत संग्रह द्वारा जूनागढ़ का भारत में लोकतांत्रिक रूप से विलय कराया गया।